चन्दामामा
अगस्त १९७७

लूटो जेम्स का मज़ा
जीतने के लिए, १००१ मज़ेदार पुरस्कार!
नंबरवार दिये गए ५ चित्रों में से कौन सा चित्र
खाली जगह में होना चाहिए?
?
1
2
3
4
5
Cadbury's
MILK
CHOCOLATE
GEMS
जल्दी करो!
अपना उत्तर, कॅड्बरिज़
जेम्स के एक खाली प्लास्टिक
पैकेट के साथ भेजो। पहले १००१ सफल प्रतियोगियों को
११ रुपये मूल्य का स्टेट बैंक गिफ्ट चेक मिलेगा।
अपना उत्तर, नाम और पते के साथ केवल
अंग्रेजी में और बड़े (ब्लॉक) अक्षरों में लिखो।
प्रवेश-पत्र इस पते पर भेजो:
"लूटो जेम्स का मज़ा" डिपार्टमेंट D–21
पोस्ट बॉक्स नं. ५६, थाने ४००६०१
प्रवेश-पत्र पहुंचने की अंतिम तिथि:
31–8–1977
चॉकलेट से भरे रंगीन कॅड्बरिज़ जेम्स
CHAITRA-C-69 HIN
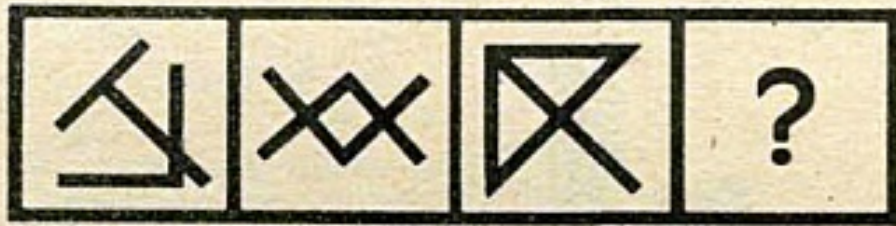
चन्दामामा

अगस्त १९७७

Printed by B. V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., and Published by B. VISWANATHA REDDI for CHANDAMAMA CHILDREN'S TRUST FUND (Prop. of Chandamama Publications) 2 & 3, Arcot Road, Madras-600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI. CHANDAMAMA is published monthly and distributed in U.S.A. by Chandamama Distributors, West Chester PA 19380. Subscription 1 year $ 6-50. Second Class Postage paid at West Chester, PA.

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'
संचालक : नागिरेड्डी

मानव के भीतर अकसर दो परस्पर विरुद्ध शक्तियों के बीच संघर्ष होता है। इस समस्या का हल मनुष्य कैसा करता है, यह तो उसके नैतिक तथा धार्मिक विश्वासों के बल पर आधारित होता है। अपने स्वार्थ का त्याग करके आदर्शों की रक्षा करनेवाले लोग उत्तम पुरुष कहलाते हैं; पर अपने आदर्शों को तिलांजली देकर स्वार्थ को साधनेवाले लोग साधारण व्यक्ति कहलाते हैं। यही नीति इस महीने की बेताल कथा "परिवर्तन" में दर्शित है। इसमें नागपाल अपने पवित्र विश्वास के हेतु सुलोचना के प्रेम को त्याग देता है।

वर्ष : २९ अगस्त १९७७ अंक : १२

एक प्रति : १-२५ : : वार्षिक चन्दा : १५-००

गुणवान्वा परजनः
स्वजनो निर्गुणोपि वा,
निर्गुण स्स्वजन श्श्रेया
न्यः परः परएवसः ।। १ ।।

[अन्य लोग गुणवान तथा अपने लोग गुणहीन होने पर भी अपने ही लोगों के आश्रय में जाना है, क्योंकि पराये लोग सदा पराये ही होते हैं ।]

य स्स्वपक्षम् परित्यज्य
परपक्षम् निषेवते,
स स्वपक्षे क्षयम् प्राप्ते
पश्चात् तैरेव हन्यते ।। २ ।।

[जो व्यक्ति अपने लोगों को त्याग परायों के आश्रय में जाता है, वह अपने लोगों के विनाश के बाद परायों के हाथों में मारा जाता है ।]

श्रेयान स्वधर्मो विगुणः
परधर्मा त्स्वसुष्ठितात्
स्वधर्मे निधनम् श्रेयः
परधर्मो भयावहः ।। ३ ।।

[उत्तम परधर्म की अपेक्षा गुणहीन स्वधर्म ही श्रेष्ठ है। स्वधर्म के वास्ते प्राण दे सकते हैं, मगर परधर्म अत्यंत भयंकर होता है ।]

अपने-पराये का अंतर

काकोलूकीयम

[४९]

कौए ने वहाँ पर इकट्ठे हुए पक्षियों को "चन्द्र सरोवर" की कहानी सुनाकर कहा–"आप लोगों ने सुना है न? बलवान नेता को रक्षक के रूप में रहने का समाचार जानकर दुश्मन कैसे डरकर भाग जाते हैं? आप सब बुद्धिमान तथा विवेक शील लोग यहाँ पर जमा हुए हैं, फिर भी विकृत आकृतिवाले तथा नीच स्वभाव के उल्लू को आप लोगों ने राजा के रूप में चुना, यह मेरे लिए अत्यंत आश्चर्य की बात प्रतीत होती है। क्या आप लोग सचमुच इस बात पर विश्वास करते हैं कि यदि हमें वाकई शत्रुओं से खतरा उत्पन्न हो जाय तो यह उल्लू कभी हमारी रक्षा कर सकता है?"

"हमने अब तक ऐसा ही माना था, मगर तुम्हारे मुंह से ये बातें सुनने के बाद उल्लू की शक्ति और सामर्थ्य के प्रति हमारे मन में भी शंका पैदा हो रही है।" पक्षियों ने कहा।

"छी: छी: आप लोगों के मन में अभी तक इस कमबख्त जाति के उल्लू के प्रति घृणा पैदा नहीं हो रही है? ऐसे पक्षी का हमारा राजा बनने पर सारी पक्षी-जाति के सर्वनाश हो जाने का खतरा है। ऐसे ही तुच्छ व्यक्तियों के सामने न्याय की याचना करने जाकर खरगोश तथा तीतर ने मेरी आँखों के सामने भयंकर मृत्यु प्राप्त की है।" कौए ने समझाया।

"वह कैसी कहानी है?" पक्षियों ने कौए से पूछा।

कौए ने उन्हें खरगोश तथा तीतर की कहानी यों सुनाई: कई वर्ष पूर्व में एक नदी के तट पर स्थित पेड़ पर निवास

करता था। उस पेड़ के निचले भाग में स्थित खोखले में एक तीतर रहा करता था। हम दोनों ने एक ही पेड़ का आश्रय लिया था, इस कारण हमारे बीच अच्छी मैत्री स्थापित हुई। हम दिन भर जंगलों में आहार की खोज करते, संध्या तक अपने नीड़ों में लौट आते और परस्पर उस दिन के अनुभव एक दूसरे को सुनाते थे।

एक दिन तीतर सवेरे ही आहार की खोज में जंगल में चला गया, बड़ी रात गये तक वापस न लौटा। मैं यह सोचकर डर गया कि शायद वह किसी खतरे में फँस गया होगा। जंगल में हम जैसे छोटे प्राणियों को हर क़दम पर खतरों का सामना करना पड़ता है न? मैं सोचने लगा, शायद तीतर कहीं किसी दुष्ट बहेलिये के जाल में फँस गया हो या किसी सियार अथवा भेडिये के मुँह में चला गया हो।

कई दिन तक मैंने चारों तरफ़ अपने प्रिय मित्र की खोज की, मगर कहीं उसका पता न चला। थोड़े दिन बाद एक खरगोश मेरे निवासवाले पेड़ के पास आया और तीतरवाले खोखले में प्रवेश किया। उस खरगोश का नाम शीघ्रघ था।

मैंने सोचा कि मेरे मित्र के निवास पर अधिकार करनेवाले खरगोश को डांटकर वहाँ से भगा दूँ। मगर मेरे मन में यह विश्वास न था कि तीतर अभी तक ज़िंदा है। इसलिए मैंने खरगोश शीघ्रघ को कुछ नहीं कहा।

इस दुनिया में प्राणियों को अपने जीवन-काल में न मालूम कितने अद्भुत देखने पड़ते हैं। मैंने जिस तीतर को मरा हुआ समझा था, वह अचानक एक दिन लौट आया। अब वह पहले की अपेक्षा ज्यादा स्वस्थ और मजबूत था। उसके पर चमक रहे थे। संभवतः आज तक उसने कहीं पूर्ण रूप से आहार का संपादन कर अपना समय बिताया होगा।

तीतर ने प्रवेश करते ही अपने निवास पर अधिकार करनेवाले खरगोश शीघ्रघ को डांटा, नाना प्रकार की गालियाँ देकर कहा–"अबे खरगोश! मेरे घर पर न रहते देख तुम मेरे निवास पर क़ब्जा कर लेते हो? तुमने बड़ी बेवकूफ़ी की; तुरंत यहाँ से चले जाओ।"

तीतर की बातें सुन खरगोश ठठाकर हँस पड़ा और बोला–"तुम तो कोई मंद बुद्धि दीखते हो। कभी थोड़े दिन तक तुम किसी घर में रहे तो वह शाश्वत रूप से तुम्हारा नहीं हो सकता। क्या तुम इतनी छोटी सी बात तक नहीं जानते?"

तीतर का गुस्सा और भड़क उठा। उसने कहा–"अरे मूर्ख! तुम मुझको धर्म-सूत्र पढ़ाते हो? मैं थोड़ा-बहुत धर्म-शास्त्र का ज्ञान रखता हूँ। धर्म-शास्त्र के ज्ञाता कहा करते हैं कि यदि जब भी घर, खेत, कुएँ या बगीचे इत्यादि के संबंध में विवाद उठ खड़ा हो जाता है, उस संदर्भ में न्यायपूर्वक वे किस पक्ष के हो सकते हैं, इसका फ़ैसला करने के लिए अड़ोस-पड़ोसवालों की गवाही ही एक मात्र आधार होती है। इसलिए तुमने अब मेरे निवास पर अधिकार कर लिया, इसके संबंध में गवाहियों को बुलवाकर न्याय का फ़ैसला माँगेंगे?"

खरगोश शीघ्रघ ने चिढ़कर कहा–"हम दोनों धर्म शास्त्र संबंधी जो ज्ञान रखते हैं, इसमें बहुत बड़ा अंतर है। एक बार किसी निवास को हम छोड़कर चले जाते हैं, तो उसे पुनः अपना कहने का हक़ किसी को नहीं होता। मनुष्य समाज की बात मैं नहीं जानता, पर हम जैसे क्षुद्र जाति के प्राणियों के हक़ों के बारे में धर्म शास्त्रज्ञ क्या बताते हैं, मैं अच्छी तरह से जानता हूँ। हम जिस घर में निवास करते हैं, उसमें बच्चे देकर उन्हें बड़ा बनाने तक उस घर पर हमारा अधिकार होता है; इसके बाद उस पर कोई भी अधिकार कर सकता है।"

१८७. अपने ढंग का पागलपन

सम्राट द्वितीय लुड्विग को यूरोप ने पागल माना। इन्होंने अपने राज्य के पहाड़ी प्रदेशों में कई दुर्ग बनाये और सन् १८८६ में आत्महत्या कर ली। उनमें सबसे सुन्दर दुर्ग "न्यूष्वान स्टइन" है। आस्ट्रिया की सीमा पर स्थित यह दुर्ग १८६७-८६ के बीच संगमरमर पत्थरों से निर्मित है। इसका निर्माण आरोहण करने के लिए दुस्साध्य शिखर पर हुआ है।

माया सरोवर

[१९]

[नर वानर के द्वारा उठा ले गये अपने छोटे भाई की खोज में सर्पनख चल पड़ा। जयशील और सिद्ध साधक ने उसे एक वृक्ष के नीचे देखा। वे उसे पकड़कर माया सरोवर का रास्ता न बताने पर मार डालने की धमकी दे रहे थे, तभी कृपाणजित एक जलाश्व पर सवार हो तलवार चलाते उनकी दिशा में बढ़ा। बाद...]

कृपाणजित की पुकार सुनकर जयशील ने अपनी तलवार सर्पनख के सिर पर से हटाई और सर घुमाकर देखा। कृपाणजित थोड़ी दूर में जलाश्व पर दिखाई दिया। सिद्ध साधक ने अपने शूल को कसकर पकड़ लिया और चिल्ला उठा—"ओह्! कितने दिन बाद कृपाणजित मेरे शूल का शिकार होने जा रहा है। आज मैं उसका अंत करके ही छोड़ूंगा।"

सर्पनख ने लपककर सिद्ध साधक का हाथ थाम लिया और पूछा—"महाशय! ठहर जाओ! मैं एक बार और स्पष्ट कर लेना चाहता हूँ। कृपया यह बताओ कि यही कृपाणजित उस भयंकर नर वानर का मालिक है?"

"हाँ, हाँ! इसी का नर वानर तुम्हारे छोटे भाई को उठा ले गया है।" सिद्ध साधक ने जवाब दिया।

"तब तो इस दुष्ट का वध करने के पहले मुझे इसके मुँह से यह समाचार जान लेने दो कि वह नर वानर मेरे छोटे भाई को कहाँ पर उठा ले गया है?" सर्पनख ने पूछा ।

"धूर्त! मेरा हाथ छोड़ दो! तुम्हारे भाई पर कुछ बीता है तो हमें इससे क्या मतलब है? यह आदमी मेरे तथा जयशील का प्रबल शत्रु है । इसे हमें पहले परलोक में भेजना होगा, इसके बाद ही तुम्हारी बारी आएगी । खबरदार!" ये शब्द कहते वह दांत पीसने लगा ।

उनका वार्तालाप सुननेवाले जयशील के मन में अचानक कोई उपाय सूझा । उसे लगा कि सर्पनख के साथ मैत्री भाव बढ़ाने के लिए यही एक अच्छा मौक़ा है । उसने सहानुभूति पूर्ण स्वर में कहा— "सर्पनख, माया सरोवर का पता तुम भले ही हमें न बताओ, फिर भी मैं तुम्हारे छोटे भाई सर्पस्वर की खोज करने में तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ । मैं और मेरे मित्र सिद्ध साधक उन पेड़ों की ओट में छिप जायेंगे । तुम कृपाणजित को बुलाकर नर वानर और तुम्हारे छोटे भाई का पता तो लगाओ ।"

"महाशय, मैं तुम्हारे प्रति अत्यंत कृतज्ञ हूँ । क्या मैं इस कार्य में अपनी तलवार और अपने वाहन का उपयोग कर सकता हूँ?" सर्पनख ने पूछा ।

जयशील ने जलाश्ववाला वाहन तथा तलवार सर्पनख के हाथ सौंपकर कहा— "कृपाणजित खड्ग युद्ध में बड़ा ही निपुण है । तुम सतर्क रहो ।" इसके बाद जयशील साधक के साथ घने वृक्षों की ओट में चला गया ।

सर्पनख अपने जलाश्व पर सवार हुआ; उधर कृपाणजित उच्च स्वर में चिल्लाते जंगल के घने वृक्षों में इधर-उधर खोज करते जलाश्व पर सवारी कर रहा था । सर्पनख ने पल-भर सोचकर यह निर्णय लिया कि कृपाणजित के पास

जाकर उसके द्वारा समाचार जान लेना उचित होगा, यों सोचकर उसने अपने जलाश्व को हांक दिया, तभी उसकी पीठ पर कोई चीज़ चुभ गई ।

सर्पनख चौंक पड़ा । उसने तलवार उठाकर पीछे मुड़कर देखा । भेड़े पर सवार नाटी जाति का सेनापति उसे दिखाई दिया । उसके हाथ में भाला चमक रहा था ।

"अबे, कमबख्त नाटी जाति का सेनापति! तुम्हीं ने भाले से मेरी पीठ में चुभो दी?" सर्पनख ने क्रोध में आकर कांपते हुए पूछा ।

ये शब्द सुनकर नाटी जाति का सेनापति हँस पड़ा और बोला–"अबे, पानी के घोड़ेवाले! अगर मैंने सचमुच भाले से चुभो दिया होता तो तुम अपनी जान से हाथ धोकर अब तक जमीन पर गिर कर धूल में लोटते होते । तुम को बुलाने के हेतु मैंने केवल तुम्हारी पीठ पर भाला छुआ दिया, बस, समझें!"

"छी:, मुझे बुलाने के लिए यही तुम्हारा जंगली तरीक़ा है?" यों डांटकर सर्पनख अपने अश्व को आगे बढ़ाने को हुआ, फिर रुककर पूछा–"हाँ, बताओ, मुझसे तुम्हारा काम ही या है? मैं सर्व शक्तिमान माया सरोवरेश्वर का सेवक हूँ । तुम इस घने जंगल में जीनेवाले कमबख्त एक मानव हो ।"

सर्पनख की बातों पर रुष्ट हो नाटी जाति का सेनापति भाला उठाने को हुआ, तभी कृपाणजित जलाश्व पर सवार हो घने वृक्षों की ओट में से बाहर निकला, सर्पनख को देख रुककर पूछा–"तुम कौन हो? शंकरसिंह की बस्ती में मेरे कंठ में फंदा डालनेवाले हो न?"

"हाँ, तुम ठीक कहते हो! पर मैं समझ नहीं पाता कि उस फंदे से तुम कैसे बच निकले? अलावा इसके तुम इस वक़्त जिस जलाश्व पर सवार हो, वह मेरे छोटे

भाई सर्पस्वर का है। मेरे भाई का तुमने क्या किया?" इन शब्दों के साथ सर्पनख ने अपने घोड़े को कृपाणजित की ओर बढ़ाया।

कृपाणजित ने अपने दोनों हाथ ऊपर उठाकर कहा—"तुम अपनी ही जगह रुक जाओ। तुमसे बहुत सारी बातें करनी हैं।"

सर्पनख ने जलाश्व को रोककर पूछा—"बताओ, कैसी बातें करनी हैं? मेरे छोटे भाई कहाँ?"

"मेरे वाहन नर वानर ने अचानक तुम्हारे छोटे भाई पर हमला किया, जलाश्व पर से उसे गिराकर उठा ले जा रहा था, तब तुम्हारे भाई के यह चिल्लाते हुए मैंने सुना—"भाई सर्पनख, बचाओ मुझे!" तो इस का मतलब है कि तुम्हारा नाम सर्पनख है। मैं इस वक़्त जिस घोड़े पर सवार हूँ, यह तुम्हारे छोटे भाई का है। मैंने इसे बस्ती के निकट जंगल में पकड़ लिया है।" कृपाणजित ने समझाया।

"मेरे सवाल का तुमने जवाब नहीं दिया, मेरे छोटे भाई कहाँ?" यों पूछते सर्पनख ने कृपाणजित पर वार करने के लिए तलवार उठाई।

"सर्पनख! जल्दबाजी मत करो। क़िस्मत बड़ी शक्तिशाली होती है। अगर तुम्हारे भाई की क़िस्मत में नर वानर के द्वारा मौत लिखी गई हो तो वह अब तक मर गया होगा। यदि ऐसा न हुआ हो, तो नर वानर पर नियंत्रण करके उसकी मदद से हम दोनों के शत्रु जयशील तथा सिद्ध साधक का वध करने के लिए जंगल छानता होगा। मैंने इसके पूर्व जंगल के ग्रामवासियों के मुँह से सुना है कि तुम्हारे साथी मकरकेतु को उन दोनों दुष्टों ने किस प्रकार सताया है।" कृपाणजित ने समझाया।

कृपाणजित की बात पूरी होने के पहले ही सर्पनख गरज उठा—"मेरे छोटे भाई की मृत्यु का कारण तुम्हीं हो। मैं

अपने अन्य शत्रुओं की बात फिर सोचूँगा। सबसे पहले तुम्हारा सिर काटकर मेरे छोटे भाई की आत्मा को शांति दिलाऊँगा।" यों कहकर अश्व पर तलवार की मूठ चलाई।

जलाश्व को अपनी ओर तेज़ी के साथ बढ़ते देख कृपाणजित भय के मारे कांप उठा। अपने अश्व को दौड़ाते बोला–"मैं अपने जानी दुश्मन जयशील का वध करके ही मरूंगा। इसलिए फिलहाल मैं तुम्हारे साथ युद्ध करना नहीं चाहता।"

सर्पनख ने कृपाणजित का पीछा किया। वृक्षों की ओट में से यह तमाशा देखनेवाले जयशील ने सिद्ध साधक से कहा–"सिद्ध साधक! भागनेवालों में एक हमारा पक्का दुश्मन है। दूसरे को अगर हम अपना मित्र बना सके तो हम आसानी से माया सरोवर तक पहुंच सकते हैं।"

"तुम्हारा विचार तो प्रशंसनीय है; लेकिन ये दोनों हमसे दूर भागे जा रहे हैं। अब हम क्या करें?" सिद्ध साधक ने पूछा।

जयशील वृक्षों की ओट में से बाहर आया, विस्मय के साथ चारों ओर दृष्टि दौड़ानेवाले नाटी जाति के सेनापति से बोला–"सेनापति, उन घोड़ों पर दौड़नेवालों को पकड़ना होगा। इस प्रदेश के चारों तरफ़ तुम्हारी जाति के लोग फैले हुए हैं न? उन्हें सावधान करके उन दोनों को प्राणों के साथ बन्दी बना सकते हो?"

"महाशय, यह कौन बड़ा काम है? इस प्रदेश के चतुर्दिक फैले जंगल, पहाड़ व घाटियाँ सब हमारे निवास स्थान हैं। डफलियाँ बजवाकर सारी मंजिलों को सूचना भिजवा दूंगा।" यों समझाकर नाटी जाति के सेनापति ने अपने वाहन को बस्ती की ओर दौड़ाया।

"सिद्ध साधक! अब हमें यहाँ पर कुछ करना नहीं है! सामनेवाले टीले पर जाकर देखेंगे कि नाटी जातिवाले आखिर क्या करते हैं?" ये शब्द कहते जयशील चल पड़ा।

"जय, महाकाल की! हम हिरण्यपुर से जिस मुहूर्त में रवाना हुए, वह अच्छा मुहूर्त न था। हमें कितनी मुसीबतें उठानी पड़ीं।" यों कहकर सिद्ध साधक ने गहरा निश्वास लिया और जयशील के पीछे चल पड़ा।

जयशील तथा सिद्ध साधक टीले पर जा पहुँचे, तभी उन्हें बस्ती की दिशा में से डफली की आवाज़ सुनाई दी। इसके थोड़े क्षण बाद जंगल के सभी प्रांतों में डफलियां बज उठीं, साथ ही हथियारों से लैस नाटी जाति के सिपाही दल बांधकर जंगल के चारों तरफ़ दौड़ते दिखाई दिये। इस बीच कृपाणजित का पीछा करनेवाले सर्पनख ने सोचा कि जंगल के घने वृक्षों के बीच कृपाणजित का पीछा करके उसका वध करना कठिन है, उसने उच्च स्वर में पुकारा–"सुनो कृपाणजित! रुक जाओ! हम नहीं जानते कि शायद मेरे छोटे भाई ज़िंदा हो! तुम हमारे जलाश्व को सौंपकर अपने रास्ते चले जाओ।"

"मगर इस बात का क्या सबूत है कि तुम जलाश्व पर क़ब्ज़ा करने के बाद मुझे अपनी तलवार का शिकार न बनाओगे? तुम यह मत समझो कि मैं तुम से लड़ने के लिए डरता हूं। सिर्फ़ देवता ही जानते हैं कि युद्ध में किसकी जीत होती है, अन्य लोग नहीं। मुझे पहले जयशील का संहार करना है। इसके बाद हो तुम्हारी बात सोचूंगा।" यों जवाब देकर कृपाणजित जलाश्व को वायुवेग से दौड़ाते नदी के तट पर पहुँचा।

सर्पनख ने सोचा कि अब मीठी बातों से कृपाणजित को वश में लाना संभव नहीं है। उसने अपने जलाश्व को हांक दिया, थोड़ी ही देर में नदी के तट पर पहुँचकर नदी के किनारे भागनेवाले कृपाणजित का पीछा किया।

इस बीच नाटी जाति के लोगों में से कुछ सिपाही कृपाणजित तथा सर्पनख को

देख उनको रोकने के लिए आयुध उठाकर एक स्थान पर खड़े हो गये। कृपाणजित ने उन्हें देख लिया। उसने सोचा–'आगे बढ़ने पर इसके पूर्व उसे नाना प्रकार से सतानेवाले नाटी जाति के लोग तैयार खड़े हैं, पीछे लौटने पर अपने छोटे भाई का बदला लेने को सर्पनख दौड़ा आ रहा है।'

उस स्थिति में कृपाणजित को अश्व के साथ नदी में कूद पड़ना ही एक मात्र उपाय प्रतीत हुआ। उसने अपने वाहन को नदी की ओर बढ़ाया, उसने देखा, नदी में दो मगर मच्छ तैर रहे हैं। उन्हें देखते ही कृपाणजित का कलेजा कांप उठा। वह यह सोचकर पल भर के लिए चकित हो देखता रह गया कि कलेजे में धंसनेवाले भाले की चोट सह ले? या पीठ पर तलवार का वार? अथवा जल पर तैरनेवाले मगर मच्छ के जबड़ों के बीच दब जाय? उसने सोचा कि उसकी मौत निश्चित है। इसलिए उसने दुस्साहस करके यह निश्चय किया–"नाटी जातिवालों तथा सर्पनख के वारों की अपेक्षा ये मगर मच्छ ही थोड़े साधु प्रकृति के प्राणी हैं। अलावा इसके जलाश्व अपनी रक्षा के प्रयत्न में मेरी भी रक्षा करेगा।" यों सोचकर उसने घोड़े को पानी में दौड़ा दिया।

कृपाणजित का पीछा करनेवाले सर्पनख ने चिल्लाकर कहा–"अरे मूर्ख! तुमने
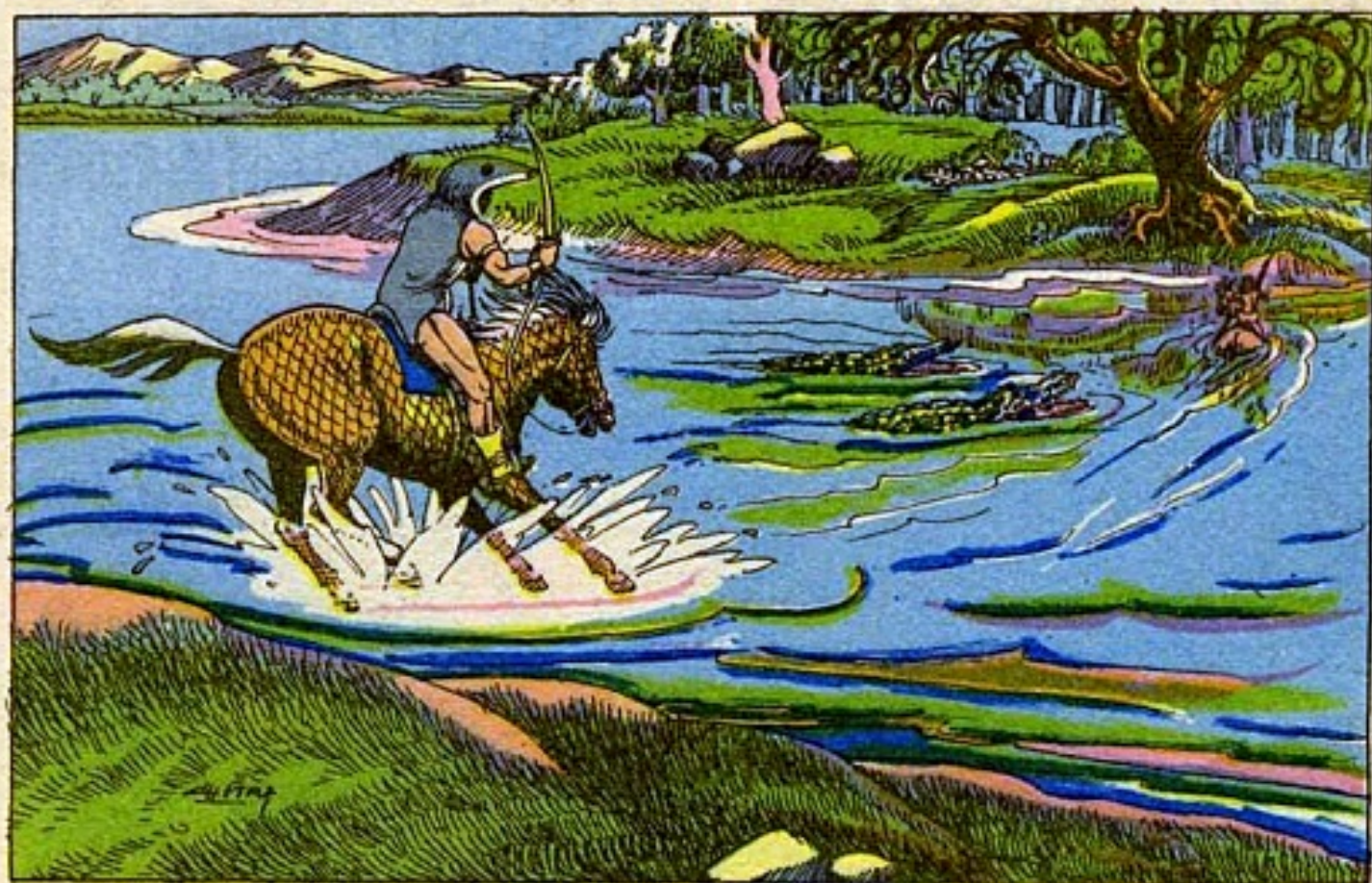
कैसा दुस्साहस किया? मगर मच्छों से तुम्हें अपनी और घोड़े की भी रक्षा करनी है। माया सरोवर तक पहुंचने के लिए अगर मेरा छोटा भाई जिंदा हो तो उसके लिए एक मात्र आधार यही जलाश्व है।" इन शब्दों के साथ सर्पनख ने भी अपने घोड को नदी में दौड़ाया।

पानी की धार में बहे जानेवाले कृपाणजित का मगर मच्छों ने पीछा किया। सर्पनख तलवार उठाये उनका वध करने को पीछा करने लगा। तट पर खड़े नाटी जाति के लोगों ने पत्थर और सूखी लकड़ियां उठाकर कृपाणजित पर फेंकना शुरू किया। इस पर सर्पनख चिल्लाकर बोला—"मैं तुम लोगों का मित्र हूं। मैं इस दुष्ट को प्राणों के साथ पकड़ने जा रहा हूँ। पत्थरों से इसे मत मारो।" तभी एक मगर मच्छ अपना मुँह खोलकर कृपाणजित की कमर पकड़ने को हुआ, इस पर सर्पनख ने उसकी पीठ पर तलवार का वार किया।

चोट खाकर मगर मच्छ छटपटाने लगा। तब दूसरा मगर मच्छ मुंह बायें कृपाणजित की ओर बढ़ा। इसे देख जलाश्व भड़क उठा, कृपाणजित ने लगाम खींचकर उसे भागने से रोकना चाहा, पर जलाश्व नदी के किनारे की ओर तेजी के साथ तैरते हुए बढ़ता गया और उस स्थान पर वह तट पर आया जहाँ मृत्यु भक्षी वृक्ष था।

मृत्यु भक्षी वृक्ष से थोड़ी दूर पर खड़े हुए नाटी जाति के लोग जोर से चिल्लाते कृपाणजित को सावधान करने लगे—"अबे महाकाय! घोड़े को लौटा लो, वरना तुम उस पेड़ के शिकार बन जाओगे।"

मगर जलाश्व पर कृपाणजित नियंत्रण न कर पाया, घोड़ा मृत्यु भक्षी वृक्ष के नीचे आ पहुँचा। अपनी पकड़ में आये कृपाणजित को मृत्यु भक्षी वृक्ष अपनी एक डाल से कसकर ऊपर खींचने लगा।

(और है)

परिवर्तन

हठी विक्रमार्क पेड़ के पास लौट आया। पेड़ से शव उतारकर कंधे पर डाल सदा की भांति चुपचाप श्मशान की ओर चलने लगा। तब शव में स्थित बेताल ने कहा–"राजन, आप का दृढ़ निश्चय असाधारण है, साधारणतः सभी लोग नागपाल की भांति चाहे कोई कारण हो या न हो, बदल जाया करते हैं; श्रम को भुलाने के लिए मैं तुम्हें नागपाल की कहानी सुनाता हूं, सुनो।"

बेताल यों कहने लगा: चन्द्रावर्त नामक देश में देवश्रेष्ठि नामक व्यक्ति के यहाँ एक गाड़ी तथा श्वेतवदन नामक एक बढ़िया क़िस्म का घोड़ा था। घोड़े की देखभाल करने और गाड़ी चलाने के लिए देवश्रेष्ठि के यहाँ नागपाल नामक एक नौकर था। नागपाल घोड़े को अपने प्राणों के समान मानता था, इस कारण

बेताल कथाएं

देवश्रेष्ठि ने अपनी मृत्यु के वक़्त गाड़ी और घोड़ा नागपाल को दे दिया। नागपाल घोड़े की अच्छी तरह से देखभाल करते हुए किराये पर गाड़ी चलाता और अपने दिन बिताने लगा।

नागपाल के पड़ोस में किराये पर गाड़ी चलाते जीनेवाला एक बूढ़ा था, उसके यहाँ सुलोचना नामक नातिन थी। नागपाल अकसर बूढ़े के घर जाता और फ़ुरसत का वक़्त वहाँ बिता देता था। धीरे धीरे नागपाल और सुलोचना परस्पर प्यार करने लगे। दोनों की शादी भी प्राय: तै हो गई।

श्वेतवदन घोड़ा बूढ़ा हो चला था, नागपाल ने उसे गाड़ी में जोतना बंद किया और उसने जो कुछ बचा रखा था, उससे घोड़े का पालन-पोषण करने लगा। इसे देख बूढ़े ने समझाया–"नागपाल, अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ। तुम घर पर खाली क्यों बैठे रहते हो? मेरी गाड़ी तुम चलाओ।" बूढ़े का यह विचार था कि नागपाल किसी भी हालत में उसके घर का दामाद बनेगा, इसलिए सम्मिलित रूप से उसकी कमाई का उपयोग किया जा सकता है।

नागपाल ने बूढ़े की घोड़ा गाड़ी चलाने को मान लिया, मगर अपनी कमाई में से आठवाँ हिस्सा अपने खर्च के लिए लेकर बाक़ी सब सुलोचना को देता गया। सुलोचना पूछ बैठती, "ऐसा तुम क्यों कर रहे हो?" वह यही जवाब देता–"हमारी

शादी के होने तक यह रक़म तुम्हारी है, इसके बाद यह हम दोनों की हो जाएगी।"

उस हालत में नागपाल अपनी कमाई में से एक कौड़ी भी बचा न पाया, रोज किराये के जो पैसे मिलते, वे उसके तथा श्वेतवदन के दाना के पीछे खर्च हो जाते।

थोड़े दिन बाद शादी की बात उठी। इस पर नागपाल ने साफ़ कह दिया— "शादी के खर्च के लिए मेरे पास इस वक़्त बिलकुल रुपये नहीं हैं। जिस दिन मेरे पास रुपये जमा हो जायेंगे उसी दिन मैं शादी करूँगा; तब तक मैं कुछ नहीं कर सकता।"

सुलोचना तो शीघ्र शादी करना चाहती थी। उसने नागपाल को सुझाया—"तुम्हारे घोड़े का भार जब तक तुम्हारे सिर रहेगा, तब तक तुम पैसे बचा नहीं सकते। तुम्हारे घोड़े व गाड़ी को बेचने पर कोई नुक़सान थोड़े ही होगा। आख़िर गाड़ी चलाने को हमारी दूसरी गाड़ी है ही। बूढ़े घोड़े के पीछे खर्च करना बेकार है। इसलिए तुम इसे किसी कसाई के हाथ बेच दो तो बड़ी आसानी से पचास रुपये मिल जायेंगे।"

दूसरे ही दिन नागपाल ने अपनी गाड़ी बेच दी। घोड़े को लेकर दूर के किसी गाँव में पहुँचा। गाड़ी की बिक्री से प्राप्त धन से थोड़ी सी जमीन ख़रीद ली और खेतीबारी शुरू की। बूढ़ा घोड़ा आख़िर तक उसके यहाँ रहा।

नागपाल ने सुलोचना के साथ विवाह करने का अपना विचार बदल लिया और उसने किसी दूसरी कन्या के साथ शादी की ।

बेताल ने यह कहानी सुनाकर कहा– "राजन, नागपाल ने सुलोचना के साथ शादी क्यों नहीं की? उसने अपना विचार क्यों बदल लिया? क्या वह सुलोचना से कहीं अधिक बूढ़े घोड़े को मानता था? अथवा बचपन से गाड़ी चलाने के पेशे को छोड़ खेतीबाड़ी के काम को उसने क्यों अपनाया? इन संदेहों का समाधान जानते हुए भी न दोगे तो तुम्हारा सिर टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा ।"

इस पर विक्रमार्क ने जवाब दिया– "नागपाल का सुलोचना के साथ परिचय होने के पूर्व ही उसके सिर पर दो जिम्मेदारियाँ थीं–एक तो श्वेतवदन की और दूसरी उसे घोड़ा और गाड़ी देनेवाले मालिक के प्रति कृतज्ञता की। पर सुलोचना ने इन दोनों जिम्मेदारियों को समझने का प्रयत्न नहीं किया। नागपाल अपने मालिक से प्राप्त गाड़ी ही चलाना चाहता था। यदि वही पेशा वह खुद करना चाहे तो उसे श्वेतवदन को कष्ट देना पड़ता, साथ ही वह दूसरा घोड़ा खरीद न पायेगा। उसने जब अपने तथा सुलोचना के दृष्टिकोण में यह मौलिक अंतर पाया, तभी उसने सुलोचना को त्याग दिया। पर अपनी आजीविका चलाने के लिए वह अपने मालिक से प्राप्त वस्तुओं पर आधारित होना चाहता था। इसलिए अपनी गाड़ी बेचकर खेत खरीदा और अपने मालिक की स्मृति में खेतीबारी शुरू की। इस पेशे के द्वारा उसे बूढ़े घोड़े का पोषण करना आसान था। इसलिए अपने जीवन को सार्थक बनाने के ढंग पर नागपाल ने व्यवहार किया।"

राजा के इस प्रकार मौन भंग होते ही बेताल शव के साथ गायब हो पेड़ पर जा बैठा।

(कल्पित)

मंत्र-ग्रंथ

चन्दन देश पर राजा विजयकेतु अनेक वर्षों तक राज्य करने के बाद वृद्धावस्था में मृत्यु को प्राप्त हुआ। उसके कोई संतान न थी। इस कारण सिंहासन पर अधिकार करने के लिए कुछ लोगों ने प्रयत्न किया और देश में अराजकता पैदा की। उस हालत में चाणक्य नामक एक ज्ञानी की मदद से सूर्यकांत नामक एक क्षत्रिय युवक राजा बन बैठा।

चाणक्य ने सूर्यकांत को आशीर्वाद देकर समझाया-"शासक को अधिकार के अभिमान में आकर मनमाने ढंग से व्यवहार नहीं करना चाहिए! मैं ईश्वर से प्रार्थना करके शासन के लिए आवश्यक नियमों की जानकारी प्राप्त कर तुम्हें बताऊँगा। उनका पालन करते हुए तुम एक आदर्श राजा बन जाओ।" यों समझाकर चाणक्य अपने निवास को गया।

इसके बाद चाणक्य ने अपने घर पर बैठकर एक ग्रंथ रचा जिसे ले जाकर सूर्यकांत को सौंप दिया। उसे समझाया- "यह एक मंत्र-ग्रंथ है। ईश्वर के आदेशानुसार मैंने इसे लिखा है। इसमें जो भी वाक्य हैं, सब भगवान के हैं। उन्हें किसी को भी बदलना नहीं चाहिए।"

सूर्यकांत ने उस ग्रंथ को आँखों से लगाया। सारा ग्रंथ ध्यान से पढ़ा, उसे समझने का प्रयास किया, जहाँ समझ में न आया, चाणक्य के द्वारा जान लिया। तब उस ग्रंथ के नियमों के अनुसार शासन करते सूर्यकांत लोकप्रिय राजा बन बैठा।

सूर्यकांत का पुत्र चंद्रकांत था। वह बचपन से ही सभी विद्याओं में असाधारण प्रतिभा दर्शाने लगा। उसका सब से बड़ा व्यसन शिकार खेलने का था।

चन्द्रकांत जब अट्ठारह साल का था, तभी सूर्यकांत का देहांत हो गया। इस पर चन्द्रकांत गद्दी पर बैठा। चाणक्य भी तब तक वृद्ध हो चुका था, इस कारण उसके स्थान पर चाणक्य का पुत्र श्रीशुक काम करने लगा।

चन्द्रकांत और श्रीशुक के बीच गहरी मित्रता थी। अचानक इस मैत्री के लिए एक जबर्दस्त परीक्षा का समय आया। वह यह कि चन्द्रकांत शिकार खेलने गया। उसने एक झाड़ी में स्थित मनुष्य को जानवर समझकर बाण चलाया और इस तरह उसे मार डाला।

मंत्र-ग्रंथ के दंड विधान के अनुसार राजा-प्रजा के लिए एक ही प्रकार का दण्ड निर्धारित था। इसलिए राजा के द्वारा किये गये हत्या-अपराध का फ़ैसला श्रीशुक को करना पड़ा। मंत्र-ग्रंथ के नियमानुसार चन्द्रकांत को आजीवन कारागार का दण्ड देना अनिवार्य था। मगर श्रीशुक की अंतरात्मा यह बताने लगी कि अनजान में की गई भूल के लिए चन्द्रकांत को ऐसा भारी दण्ड देना अन्याय है। यदि मंत्र-ग्रंथ के नियमों का उल्लंघन किया जाय तो इसके द्वारा हलचल मच जाने की संभावना है!

श्रीशुक ने अपने पिता की सलाह माँगी, इस पर चाणक्य ने समझाया–"शिकार के मोह में पड़कर चन्द्रकांत ने जो अपराध किया है, उसके लिए उसे वह दण्ड भोगना ही पड़ेगा।"

इस पर श्रीशुक ने तैश में आकर कहा–"आपने कहा कि भगवान ने ही यह मंत्रग्रंथ प्रदान किया है। मुझे बताइये कि भगवान को कैसे वश में करना है? मैं उसके द्वारा चन्द्रकांत को बचाने का उपाय जान लूंगा।"

चाणक्य ने हंसकर कहा–"पगले! क्या तुम समझ रहे हो कि ये सारे काव्य सचमुच भगवान ने ही प्रदान किये हैं? अधिकार के मद में आकर राजा जनता के प्रति अन्याय न कर बैठे, इस ख्याल से मैंने ही भगवान के नाम मंत्र-ग्रंथ का सृजन किया है।"

"तब तो मैं भी भगवान के नाम पर मंत्र-ग्रंथ में थोड़े से परिवर्तन करूँगा! मैं उस में जोड़ दूंगा कि राजा के तो अनेक दायित्व होते हैं। इसलिए साधारण व्यक्ति तथा राजा के लिए एक ही प्रकार का न्याय युक्ति संगत नहीं है, राजा जो भी करे, वह गलत नहीं है।" श्रीशुक ने कहा।

चाणक्य ने क्रोध में आकर डांटा—"अरे मुर्ख! अपने मित्र की रक्षा करने के हेतु तुम मंत्र-ग्रंथ में परिवर्तन करोगे तो वह देश के लिए खतरनक सिद्ध होगा! अपराध का पद के साथ कोई संबंध नहीं होता!"

लेकिन श्रीशुक ने अपने निश्चय को नहीं बदला। इसके बाद उसने यह घोषणा की कि भगवान के आदेश पर उसने मंत्र-ग्रंथ में नये सूत्र जोड़ दिये हैं। इस प्रकार चन्द्रकांत बच गया।

इस घटना के थोड़े महीनों बाद उस देश के सेनापति ने चन्द्रकांत की हत्या की और वह खुद राजा बन बैठा। उसने सोचा कि शासक के रूप में उसे जनता का सहयोग प्राप्त करना है तो श्रीशुक की सहायता की जरूरत है। यों सोच कर उसने श्रीशुक को बुला भेजा। श्रीशुक चन्द्रकांत की मृत्यु पर मन ही मन व्याकुल होते हुए बोला—"तुम एक हत्यारे हो! तुम्हारे अपराध का फ़ैसला होना चाहिए।"

सेनापति ने गरज कर कहा—"यह मत भूलो कि इस वक़्त मैं राजा हूँ। सभी फ़ैसलों से मैं अतीत हूँ।"

"लेकिन तुमने जिस वक़्त यह अपराध किया, उस वक़्त तुम राजा न थे। तुम्हें न्यायालय के समक्ष अपराधी बनकर खड़ा होना होगा।" श्रीशुक ने समझाया।

सेनापति ने मुस्कुरा कर कहा–"मेरे अपराध ने मुझे राजा के रूप में–अपराध से अतीत बनाया है। मंत्र-ग्रंथ स्वयं बता रहा है कि राजा जो भी करे, वह गलत नहीं है। तुम उसमें एक नया सूत्र जोड़ दो, वरना तुम सीधे भगवान के पास जाओगे।"

श्रीशुक को लगा कि वह पागल होता जा रहा है। उसने अपने पिता की सलाह न मान कर अपने मित्र चन्द्रकांत की रक्षा करने के लिए मंत्र-ग्रंथ में जो परिवर्तन किया, उसका परिणाम यों हो गया है। उसकी वजह से अधिकार की लालसा रखनेवालों में यों लोभ पैदा हो गया है।

आख़िर लाचार हो श्रीशुक ने मंत्र-ग्रंत्र में सेनापति के कहे अनुसार परिवर्तन किया। इसके बाद वह ग्रंथ जनता के शोषण के लिए एक ज़बर्दस्त अस्त्र बन बैठा। राजा के दुष्ट शासन के विरुद्ध राज्य में अराजकता फैल गई। सेनापति को शासन का कार्य संभालने का समय न था, उसका सारा समय अपनी आत्म-रक्षा में व्यतीत होने लगा।

इसके बाद फिर जनता ने भयंकर क्रांति मचाई। एक नया नेता पैदा हुआ। उसने पुराने राजा को हटाया और शासन सूत्र को अपने हाथ में लिया।

श्रीशुक ने नये राजा से मिलकर यों सलाह दी–"यदि आप सचमुच जनता का हित चाहते हैं, तो इस मंत्र-ग्रंथ को भूल जाइए। अनुभवी लोगों से मंत्रणा करके शासन कार्य संभालने के लिए नये नियम और न्याय सूत्रों का निर्माण कीजिए। किसी भी स्थिति में उन नियमों का उल्लंघन न कीजिए। अपने प्राणों की रक्षा के लिए भी सही धर्म-सूत्रों में परिवर्तन करने का प्रयत्न न कीजिए।"

एक से बढ़कर एक!

एक गृहस्थ कंजूसी के लिए बड़ा ही मशहूर था। एक बातूनी ने अपने मित्रों के समक्ष इस बात का दाँव लगाया कि वह उस कंजूस के यहाँ से दान लेकर ही लौटेगा। वह गृहस्थ के घर पहुँचा।

"तुम इस गाँव के लिए नये लगते हो! यहाँ पर तुम्हें एक दाना भी न मिलेगा। जाओ!" गृहस्थ ने कहा।

"बेचारे को अगले जन्म में न मालूम कितने कष्ट झेलने हैं।" बातूनी ने कहा।

"किसे?" गृहस्थ ने पूछा।

"पिछले जन्म में मैं भी धनी था, आप जैसे कंजूस बनकर किसी को कुछ न दिया, इसलिए मुझे यह जन्म प्राप्त हुआ। आप का भी अगले जन्म में यही हाल होगा।" बातूनी ने कहा।

कंजूस ने दस पैसे निकालकर पूछा–"लो, ये दस पैसे देता हूँ, कब चुकाओगे?"

"अगले जन्म के लिए ऋणी बना रहूँगा।" बातूनी ने जवाब दिया।

"तब तो मुझे यह ऋण वसूलने के लिए भिखारी का जन्म लेकर ये दस पैसे वसूलने हैं; चलो, जाओ।" यों कहते कंजूस ने अपने दस पैसे जेब में डाल लिये।
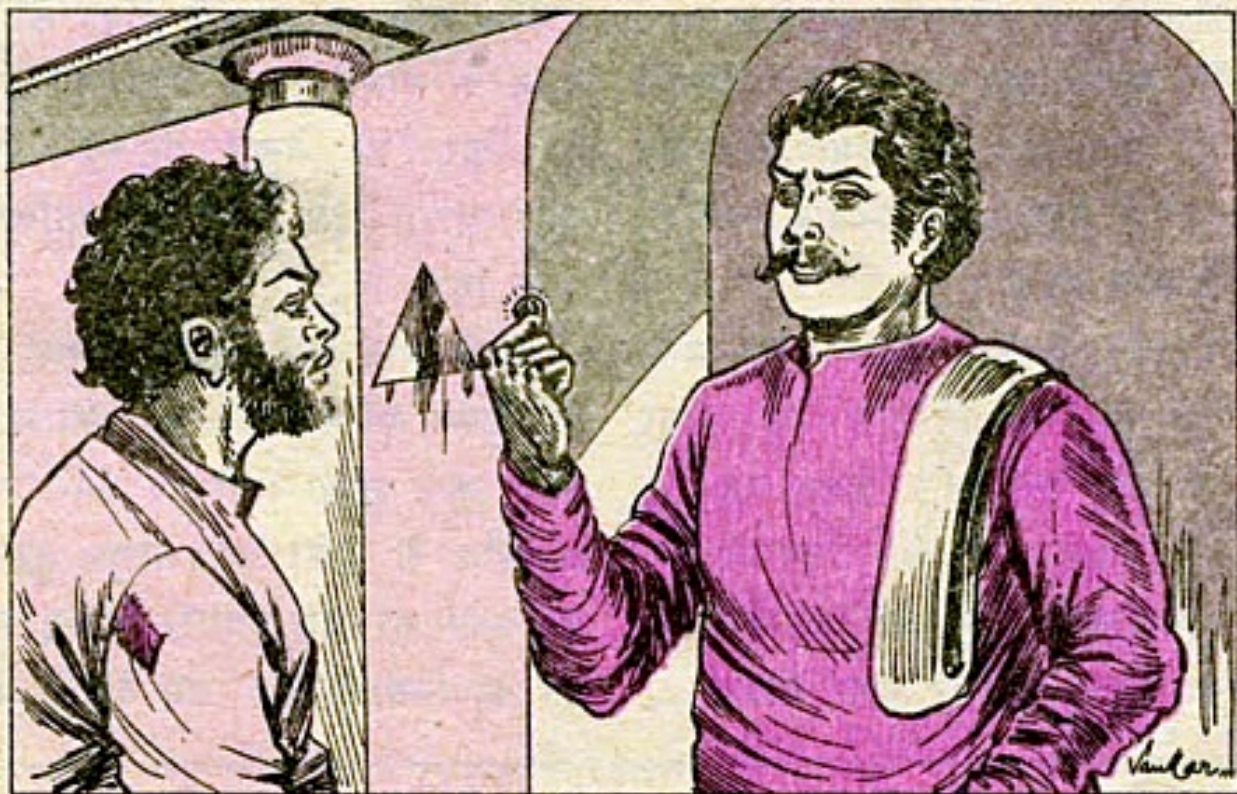
सच्ची शिक्षा

सुवर्णपुर के राजा चन्द्रसेन की इकलौती बेटी मालिनी थी। एक दिन अचानक विवाह के प्रति उसका मन केन्द्रित हुआ। उसकी अवस्था की कन्याएँ कभी विवाह करके माँ बन चुकी हैं। कम से कम उसकी माँ होती तो उसके मन की अवस्था को भांप लेती। मगर मालिनी के बचपन में ही उसकी माँ का स्वर्गवास हो चुका था। मातृहीन मालिनी का पालन-पोषण राजा ने बड़े ही लाड़-प्यार से किया और अब योग्य वर के साथ उसका विवाह करने की बात वे सोच रहे हैं।

उद्यानवन में कोई युवक प्रवेश करने जा रहा था, पर पहरेदार उसे भीतर आने से रोक रहा था। युवक कह रहा था—"मैं पराये देश का निवासी हूँ। उद्यान के तालाब में मुझे पानी पी लेने दो। मैं अपनी प्यास बुझाकर चला जाऊँगा।"

ये बातें मालिनी के कानों में पड़ी। उसने पहरेदार से कहा—"परदेशी के प्रति हमें सहानुभूति दिखानी है, तुमने उसे पानी पीने से भी क्यों मना किया?"

इस पर पहरेदार ने परदेशी को उद्यान के अन्दर आने दिया। उस युवक को देख मालिनी विस्मय में आ गई। वह पच्चीस साल का युवक है। दूर की यात्रा करने के कारण उसके कपड़े मैले हो गये हैं; फिर भी देखने में वह निहायत सुंदर था। उसे देखते ही मालिनी ने प्यार किया।

इसके बाद मालिनी ने नौकरों द्वारा उस युवक को नारियल का पानी दिलाया और उसके साथ वार्तालाप करने लगी। बातचीत के द्वारा उसे मालूम हुआ कि उस युवक का नाम गजपति है, वह पड़ोसी देश का निवासी है। उस देश में अकाल

मगन लाल

पड़ा है। इस कारण वह जीविका की खोज में इस राज्य में आया है।

संध्या के होते ही मालिनी उठ खड़ी हुई, अंतःपुर में जाते हुए बोली–"गजपति, कल शाम को भी तुम ज़रूर यहाँ पर आ जाओ।" इसके बाद उसने पहरेदारों को आदेश दिया कि वह युवक जब भी उद्यान के पास आवे तो उसे अन्दर आने दे, तब पालकी पर बैठकर अंतपुर की ओर चल पड़ी।

धीरे-धीरे राजा को मालूम हुआ कि मालिनी रोज शाम उद्यान में किसी युवक से मुलाक़ात कर रही है। राजा ने मालिनी को बुलवाकर समझाया–"बेटी, मैं सब प्रकार से तुम्हारे योग्य वर के साथ तुम्हारा विवाह करने की सोच रहा हूँ। मैंने सुना है कि तुम प्रति दिन उद्यान में किसी युवक के साथ स्नेहभाव बढ़ा रही हो। यदि तुम उसके साथ विवाह करने की इच्छा रखती हो तो उसे मेरे पास ले आओ। मैं परीक्षा करके देखूँगा कि वह तुम्हारे लिए योग्य है या नहीं?"

दूसरे दिन मालिनी ने गजपति के आने पर बताया–"मेरे पिताजी तुम्हारी योग्यता की जाँच करना चाहते हैं। यदि तुम मुझसे प्यार करते हो तो तुम्हें उस परीक्षा में सफल होना है। वरना तुम अपने रास्ते

चले जाओ।" यों समझाकर मालिनी ने उसे राजा के पास भिजवा दिया।

राजा ने गजपति से युद्ध-विद्याओं, युद्ध-व्यूहों तथा राजनीति के संबंध में कई प्रश्न पूछे; पर गजपति एक भी प्रश्न का सही उत्तर नहीं दे पाया। राजा ने असंतुष्ट होकर उसे भेज दिया।

इसके बाद राजा ने मालिनी को समझाया–"बेटी, गजपति किसी भी दृष्टि से तुम्हारे योग्य नहीं है।"

मालिनी ने निराश होकर कहा–"पिताजी, वह तो एक साधारण व्यक्ति है। उससे राज्य संबंधी सवाल पूछना ही उसके प्रति अन्याय था।"

उस दिन रात को मालिनी चिंता में डूब गई। अब गजपति उसे दिखाई न देगा। यदि वह आइंदा देख न पायेगी तो उसका जीवन ही व्यर्थ है।

दूसरे दिन भी उसका मन भारी था। रोज की भांति उद्यान में जाने की उसकी इच्छा न हुई, लेकिन यह सोचकर वह उद्यान की ओर चल पड़ी कि कम से कम वे दोनों जहां बैठकर बातचीत करते थे, उस जगह को देख संतुष्ट हो जावे।

मालिनी ने उद्यान में पहुंचकर देखा कि गजपति उसी का इंतज़ार कर रहा है। मालिनी को देखते ही आगे बढ़कर बोला—"राजकुमारी! आपके पिताजी ने मुझसे जो सवाल किये, वे बेमतलब के थे। मैं राजनीति को क्या जानूं? जब तक आप साहस करके अपना निर्णय राजा को न सुनावेंगी, तब तक हमें इस प्रकार गुप्त रूप से ही मुलाक़ात करनी होगी।"

गजपति के मुंह से ये शब्द सुनने पर मालिनी के मन में उसके प्रति एक दम घृणा पैदा हो गई। उसने यों कहा: "अब हमारे विवाह की बात करना बेकार है। मैं तुम्हें इस बात के लिए दोष न दूंगी कि तुम राजनीति का ज्ञान नहीं रखते हो। मैंने तुम्हें पहले ही बताया था कि यदि तुम परीक्षा में सफल न होगे, तो अपना रास्ता नाप लो। परीक्षा में तुम सफल न हो सके। यदि सचमुच तुम में आत्म सम्मान की भावना होती तो तुम मुझे अपना चेहरा तक न दिखाते। यदि मेरे सामने आ भी जाते तो विवाह की बात न छेड़ते। मैं देखती हूं कि प्रत्येक पुरुष में कम से कम पौरुष का जो भाव होता है, वह भी तुम्हारे भीतर नहीं है। उल्टे तुम्हारा यह सोचना कि मैं तुम्हारे वास्ते अपने पिता के साथ दगा करूंगी, यह बिलकुल गलत बात है। इसलिए तुम अपने रास्ते आप चले जाओ।"

इसके बाद राजकुमारी ने पहरेदारों को आदेश दिया कि आइंदा गजपति को उद्यान में प्रवेश करने न दे, तब वह अंतःपुर को चली गई।

मंत्री का तंत्र

एक संपन्न देश में अचानक चोरी व डाके पड़ने लगे। हर रोज़ चोरियाँ हो जाती थीं, लेकिन पहरेदारों को चोरों का पता न चल रहा था। इस कारण राजा ने चोरों को पकड़ने के लिए एक सैनिक दल को नियुक्त किया, इस पर भी कोई फ़ायदा न रहा। तब राजा ने अपने सेनापति रणधीर को चोरों को पकड़ने के लिए नियुक्त किया। राजा ने एक सप्ताह के अन्दर चोरों को पकड़ने का आदेश दिया था, पर रणधीर चार सप्ताहों में भी चोरों को पकड़ न पाया।

इसलिए राजा ने स्वयं चोरों का पता लगाने का निश्चय किया। निद्रा तजकर तीन रात राजा ने पहरा दिया। नगर में गश्त लगाया, फिर भी कोई फ़ायदा न रहा। चोरियाँ यथा प्रकार चालू थीं।

सारे प्रयत्न विफल होने के बाद राजा के मन में मंत्री की सलाह लेने का विचार आया। मंत्री की तबीयत बिलकुल ठीक न थी, इधर वह छे महीनों से घर पर ही था।

राजा स्वयं मंत्री के घर पहुँचा और बोला—"मंत्री महोदय, हमारे राज्य में चोरों का बोलबाला हो गया है। तुम्हें अपनी बुद्धिकुशलता का उपयोग करके चोरों को पकड़ना होगा।"

"अच्छी बात है, महाराज! इस वक़्त मेरी तबीयत थोड़ी अच्छी है। इसलिए में कल सुबह दरबार में आकर चोरों को पकड़ने की योजना बता दूंगा।" मंत्री ने उत्तर दिया।

पर दूसरे दिन सवेरे मंत्री दरबार में न गया। दुपहर हुआ, तब भी न आया। आखिर घर पर बुलावा भेजा तो पता

शांति मल्होत्रा

चला कि सवेरे ही मंत्री राज दरबार में गये हैं ।

उस दिन शाम को राजा दरबार समाप्त करने जा रहा था, तभी मंत्री आ पहुँचा । राजा न क्रोध में आकर पूछा–"मंत्री, तुमने चोरों के बारे में क्या सोचा है?"

"महाराज! चोरों को पकड़ना कोई बड़ी समस्या नहीं है, उन्हें मैं जब भी पकड़ सकता हूँ । मगर इससे भी एक बड़ा ख़तरा उपस्थित होने जा रहा है । मुझे खबर मिली है कि हमारी पश्चिमी सीमा पर दुश्मन हमला करने जा रहा है । आप जानते हैं कि देश की सुरक्षा की दृष्टि से उस सीमा की रक्षा करना निहायत ज़रूरी है । तत्काल हमारे सेनापति रणधीर को थोड़ी सेना के साथ वहाँ पर भेजना बहुत ही आवश्यक है; विलंब नहीं होना चाहिए ।" मंत्री ने समझाया ।

राजा का आदेश पाकर रणधीर सेना समेत पश्चिमी सीमा पर पहुँचा

दस दिन बीत गये, रणधीर ने लौटकर राजा से कहा–"महाराज, मंत्री महोदय का अनुमान निराधार है । उन्होंने हमें गलत सूचना दी है । हमले की कोई सूचना दिखाई नहीं दे रही है । फिर भी थोड़े से सैनिकों को सीमा पर छोड़, मैं आप की आज्ञा माँगने आया हूँ ।" फिर मंत्री की ओर मुड़कर अवहेलनापूर्ण स्वर में पूछा–"क्या आप ने चोरों को पकड़ लिया है? जब मैं इस कार्य में सफल न हो सका तो आपको सफलता कैसे मिल सकती है?"

मंत्री ने कहा–"नहीं सेनापति! चोर को साबित करने के लिए एक छोटे उपाय के द्वारा यहाँ से बाहर भेज दिया, तब से राजधानी में चोरियाँ नहीं हो रही हैं!" फिर राजा की ओर मुड़कर बोला–"महाराज! रणधीर को बन्दी बनवाइए, उसके अनुचरों का अपने आप पता चल जाएगा ।"

गलत गवाही

एक गाँव में एक जमींदार था। एक बार एक व्यापारी के साथ उसका झगड़ा हुआ, क्रोध में आकर उसे मार डाला। उसी गाँव में गोविंद नामक एक युवक था जो जमीन्दार का विरोध किया करता था। जमीन्दार ने हत्या का अपराध गोविंद के सर मढ़ना चाहा। उसने लक्ष्मण शास्त्री नामक पुरोहित को धन देकर गवाही देने के लिए उसे मनवाया कि गोविंद जब व्यापारी को मार रहा था, तब उसने देखा है।

न्यायालय में लक्ष्मण शास्त्री ने यों बयान दिया–"मैं पुरोहित हूँ। मेरे घर विवाह करने योग्य एक कन्या है। हत्या के दिन इतवार की शाम को पाँच बजे मैं अपनी पुत्री का लग्न पत्र लिखाने के लिए रामशास्त्री के घर जा रहा था, रास्ते में मैंने गोविंद के द्वारा व्यापारी को छुरी भोंकते अपनी आँखों से देखा है। उस वक्त पाँच बजकर बीस मिनट का समय होगा।"

न्यायाधीश ने झट कहा–"तुम झूठ बोलते हो। इतवार की शाम को साढ़े चार बजे से छे तक राहू काल होता है। उस समय क्या तुम अपनी पुत्री के विवाह का लग्न-पत्र लिखाने घर से निकल पड़ोगे? यह तो सफ़ेद झूठ है।"

फिर क्या था, लक्ष्मण शास्त्री घबरा गया और उसने सच्ची बात बता दी। इस पर जमीन्दार के साथ लक्ष्मण शास्त्री को भी सजा मिली।

मांत्रिक जग्गू

एक गांव में ,जग्गू नामक एक ओझा था।

गांव के किसी के घर कोई बीमार पड़ जाता तो जग्गू वहां पर पहुंच कर उन्हें डरा देता–"अमुख आदमी ने तुम पर मंत्र फुंकवाया है, तुम इसकी प्रतिक्रिया न कराओगे तो खतरे में फंस जाओगे।" साथ ही ज़रूरत पड़ने पर झूठे सबूत भी दिखलवा देता, जिस पर भोले ग्रामवासी विश्वास करते, उसके द्वारा प्रतिक्रिया करा कर रुपये, मुर्गियां और भेड़ें भी उसे भेंट में देते थे।

जग्गू की वज़ह से गांव में एकता जाती रही, परस्पर संदेह बढ़ता गया। जग्गू के प्रति गांव के लोग आदर का भाव रखते थे और साथ ही उससे डरते भी थे।

उस गांव में रामनिवास और गोविंद नामक दो मित्र थे; वे जग्गू के मंत्र-तंत्रों पर विश्वास न करते थे। वे दोनों पड़ोसी थे। राम निवास दुनियादारी का अच्छा ज्ञान रखता था, जब कि गोविंद भोला था। रामनिवास भी गोविंद को अपने छोटे भाई के समान मानता था। दूसरे लोग उसे धोखा न दे, इस बात का भी वह ख्याल रखता था। मगर गोविंद मन ही मन मंत्र-तंत्र तथा क्षुद्र देवी-देवताओं पर विश्वास करता था।

मांत्रिक जग्गू ने सोचा कि गोविंद को उसके चंगुल में फंसने से बचानेवाला व्यक्ति रामनिवास है, इसलिए उन दोनों की मैत्री तोड़ दे तो दोनों उसके जाल में फंस जायेंगे। एक दिन रात को वह चार सेर भटनास ले गया, सबकी आंख बचा कर गोविंद के बैल के आगे रख कर अपने घर चला गया।

सवेरे तक बैल का पेट हांडी जैसे फूल गया। वह हांफते हुए नीचे गिर

राम निवास वर्मा

पड़ा और छटपटाने लगा। बैल की हालत देख गोविंद अपना सर पीटते रामनिवास के घर दौड़ गया, उसे बैल दिखाया।

रामनिवास ने बैल की जांच करके गोविंद से बताया–"तुम घबराओ मत, बैल ने कोई चीज़ हद से ज्यादा खा डाली है। शाम तक ठीक हो जायगा।" यों समझा कर उसने बैल के मुंह में दो नली-भर कर इमली का रस डलवाया।

फिर भी गोविंद का मन अधीर था, इस कारण वह हर किसी से सलाह मांगने लगा। क्योंकि गोविंद की सारी खेतीबाड़ी उस बैल पर आधारित थी। उसने भारी रक़म देकर वह बैल खरीदा था। इसलिए किसी भी उपाय से सही, वह उसे बचाना चाहता था।

जग्गू का एक साथी गोविंद के घर आया, बैल की हालत देख बोला–"गोविंद, तुम ऐसे लापरवाह क्यों हो? दवा-दारू से चंगा करने के लिए यह कोई बीमारी थोड़े ही है? तुम जल्दी जग्गू को दिखला दो। हाल ही में माधो का बैल ऐसे ही गिर पड़ा था, जग्गू ने उसे मिनटों में ठीक किया है।"

फिर क्या था, गोविंद का विश्वास जग्गू पर जम गया। रामनिवास की
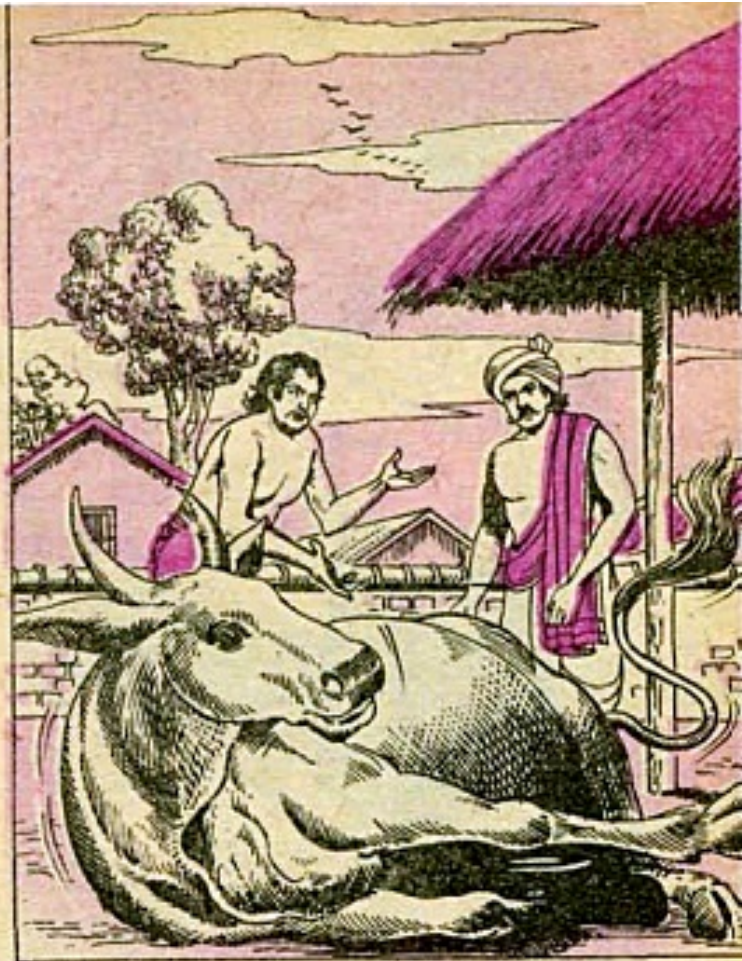
आँख बचाकर गोविंद जग्गू के घर पहुँचा, उसके हाथ पकड़ कर गिड़गिड़ाने लगा–"जग्गू, मैं तुम्हारे पैरों पड़ता हूँ। मेरे बैल को बचा लो।"

जग्गू ने ऐंठ दिखाते हुए कहा–"तुम्हारा तो मुझ पर विश्वास नहीं है। मैं जो कुछ बता दूं तुम्हें विचित्र लगेगा।"

"नहीं भाई! ऐसा मत कहो। मेरी अक़्ल चरने गई थी, मैं पहले ही तुम्हारे पास आ जाता तो अब तक मेरा बैल जुगाली करता होता।" गोविंद ने रोनी सूरत बनाकर कहा।

जग्गू ने आश्चर्य प्रकट करते हुए पूछा–"क्या कहा? तुम्हारा बैल जुगाली नहीं

करता? किसीने कुछ गड़बड़ कर रखा है। चलो, मैं उनका फ़ैसला कर देता हूं?" यों कहते एक थैली के साथ कुछ जरूरी चीजें लेकर जग्गू गोविंद के साथ चल पड़ा।

जग्गू ने बैल की जांच की, उसकी पूंछ में से एक बाल खींच कर कोई मंत्र पढ़ा। आश्चर्य की बात यह थी कि जग्गू के हाथ का बाल चक्कर काट कर गोल हो गया।

इसे देख गोविंद कांप उठा।

"देखते हो न गोविंद! अगर तुमने थोड़ी देर कर दी होती तो तुम्हारा बैल बच न जाता। अभी कुछ बिगड़ा नहीं; वक़्त है। सूर्योदय के पहले ठीक कर दूंगा। फिलहाल तुम ये गोलियाँ बैल को खिलाओ। शाम तक वह चलने लग जाएगा।" ये शब्द कह कर जग्गू ने गोलियाँ गोविंद के हाथ दीं। रात को जो प्रबंध करना था, उसे गुप्त रूप से गोविंद के कान में बता दिया।

अंधेरा हो जाने पर जग्गू गोविंद के घर आ पहुंचा। सर के बाल बिखेरे, माथे पर भभूत लगाये, घर के किवाड़ बंद करवा दिये, चौपाल में रंगोली करवाई, तब रंगोली पर दीपक रखा, नींबू तथा कुम्हाड़े काटते हुए मंत्र पढ़ने लगा– 'ह्लीम्-ह्लाम्' तब वह रंगोली पर पद्मासन लगा कर बैठ गया, पल-भर के लिए आँखें मूंद लीं।

गोविंद को लगा कि जग्गू कोई साधारण आदमी नहीं है, वह यह सोचकर पछताने लगा कि आज तक रामनिवास की बातों में आकर उसने जग्गू की उपेक्षा की है।

जग्गू झट से आँखें खोल जोर से चिल्ला उठा–"गोविंद, तुम फावड़ा लेकर मेरे साथ चलो।" इसके बाद वह पिछवाड़े में गया, ईशान दिशा में एक स्थान की जांच करके वहां पर जमीन

खोदने को कहा। गोविंद ने उसके आदेश का पालन किया।

अचरज की बात थी कि हाथ-भर की गहराई में एक मिट्टी की मटकी निकल आई, उसमें कौड़ियाँ, बालों से युक्त एक लकड़ी का खिलौना तथा तीन सूखे नींबू थे।

"देखते हो न गोविंद! तुम्हारे बैल और मवेशी सब इन नींबों की भांति सूख जाते।" जग्गू बोला।

इसे देख गोविंद का खून खौल उठा। उसने गरज कर पूछा—"यह काम किस दुष्ट ने किया है?"

"गोविंद! तुम यह सब जानने की कोशिश मत करो। मेरी बातों पर तुम विश्वास न करोगे। यह करनी तो तुम्हारे मित्र रामनिवास की है।" जग्गू ने धीरे से कहा।

गोविंद जग्गू की बातों पर यक़ीन न कर पाता, मगर जग्गू के दिखाये सबूतों को देख उसने सोचा कि शायद उसकी बात सच भी हो।

"चाहे किसीने भी क्यों किया हो, अब हमें इससे पिंड छुड़ाना है। इसकी प्रतिक्रिया करनी है। बलि चढ़ानी है। इसके लिए साधारण बकरे काम न देंगे। माथे पर सफ़ेद दागवाला काला बकरा चाहिए। अगर तुम उसे ला न सकोगे

तो हमारा सारा प्रयास बेकार जाएगा।" जग्गू ने समझाया।

"एकदम अचानक तुम इस रात के वक़्त ऐसे बकरे की माँग करोगे तो मैं कहाँ से लाऊँ?" गोविंद ने निराशा भरे स्वर में पूछा।

जग्गू ने सोचने का अभिनय करते हुए कहा—"मुझे थोड़ा-सा याद है कि ऐसा बकरा रामनिवास के रेवड़ में है।"

"मैं ऐसा बकरा माँग बैठूं तो वह दर्जनों सवाल करेगा? दूसरी बात वह बकरा देगा, यह भी निश्चित रूप से कहा नहीं जा सकता।" गोविंद ने संदेह प्रकट किया।

"रामनिवास मांगने पर थोड़े ही देगा? तुम्हें चोरी करके लाना पड़ेगा।" जग्गू ने कहा। चोरी की बात सुनते ही गोविंद का चेहरा पीला पड़ गया।

जग्गू ने उसे उकसाते हुए कहा– "तुम्हारे दो हज़ार रुपये क़ीमतवाले बैल को मारने का रामनिवास ने षड़यंत्र किया है। मैं कहता हूँ कि उसे बचाने के लिए तुम रामनिवास का सर भी काट डालो तो कोई पाप न लगेगा।"

गोविंद ने अपने कलेजे को पत्थर बनाया। रामनिवास के पिछवाड़े में प्रवेश करके सफ़ेद दागवाले बकरे को लाकर गोविंद ने जग्गू के सामने रखा। जग्गू ने उसकी बलि चढ़ाई।

उस दिन सवेरे ही जाग कर रामनिवास अपने घर के बाहर चबूतरे पर बैठा हुआ था। उसने देखा कि जग्गू गोविंद के घर से बाहर जा रहा है और उसके अनुचर बकरे के धड़ को उठा कर ले जा रहे हैं।

उसने सोचा कि आखिर गोविंद भी जग्गू के जाल में फँस गया है।

सवेरे रामनिवास को पत्ता चला कि उसका एक बकरा गायब है, तब जाकर उसे असली हालत मालूम हुई। रामनिवास को लगा कि जग्गू का खेल बंद न करावे तो गाँव के लोग आपस में लड़ मरेंगे।

इसके बाद रामनिरास गोविंद के घर दौड़ कर पहुँचा, जुगाली करनेवाले बैल को

देख बोला—"गोविंद देखते हो न? यह सब दुर्गा माता की कृपा है। मैंने माता के सामने मनौती की थी कि तुम्हारा बैल अगर चंगा हो गया तो मैं अपने सफ़ेद दागवाले बकरे की बलि चढ़ाऊँगा। मगर इस बीच धोखा हो गया है। रात को किसीने मेरे बकरे की चोरी की है। काली माता अगर नाराज़ हो जायेंगी तो मेरे रेवड़ में शायद एक भी बकरा न बचेगा।" इन शब्दों के साथ वह भय का अभिनय करने लगा।

काली माता का नाम सुनते ही गोविंद का कलेजा कांप उठा। कांपते हुए हाथों से गोविंद रामनिवास के हाथ पकड़ कर रुद्ध कंठ से बोला—"भाई साहब! रात को मैंने ही तुम्हारे बकरे की चोरी की है। मुझे माफ़ कर दो। कोई ऐसा उपाय सोचो जिससे दुर्गा माता नाराज़ न हो जाये!" इन शब्दों के साथ उसने सारी कहानी सुनाई।

रामनिवास ने मुस्कराते हुए कहा—"पगले, मैंने तुम्हारे मुँह से सच बतलाने के लिए ही यों नाटक रचा है। मंत्रों से कुछ होनेवाला नहीं है। देखो तो सही, तुम्हारे बैल के गोबर में कौन-सी चीज़ है?"

गोविंद ने गोबर की जांच करके देखा, उसमें फूले हुए बटनास थे। गोविंद की

समझ में न आया कि बैल को किसने बटनास खिलाये हैं।

रामनिवास ने समझाया कि उन दोनों की मैत्री को बिगाड़ने के लिए जग्गू ने ही यह काम किया है। तब जाकर गोविंद की आँखें खुलीं।

"भाई, देखते रह जाओ, आज रात को ही मैं जग्गू के षड़यंत्र का पता लगा कर गाँववालों के लिए उसका पिंड छुड़ा लूँगा। तुम चार-पाँच आदमियों को तैयार रखो।" रामविवास ने कहा।

इसके बाद रामनिवास जग्गू के घर दौड़ कर पहुँचा, गिड़गिड़ाते स्वर में बोला—"जग्गू! अब तुम्हीं मेरे लिए एक

मात्र सहारा हो! दो दिनो से मेरी गाय दूध नहीं दे रही है। बछड़े को पास तक पटकने नहीं दे रही है, मेरी भेंसें भी पानी तक नहीं पी रही हैं। मेरा बढ़िया बकरा रातों रात गायब हो गया है। ये सब देखने से ऐसा लगता है कि मेरे घर पर किसी ने मंत्र फुंकवा दिया है। मेरे घर एक बार आकर देख तो लो।"

बहुत समय बाद रामनिवास को अपने जाल में फंसते देख जग्गू मन ही मन खुश हुआ। वह रामनिवास के साथ चल पड़ा।

घर का सारा हाल देख जग्गू रामनिवास से बोला—"यह सब मुझे तो मंत्र का प्रभाव ही मालूम होता है। इसे तो साबित करना है न? कल रात तक मैं ठीक किये देता हूँ। तुम चिंता न करो।" यों समझा कर जग्गू अपने घर चला गया।

उस दिन आधी रात को रामनिवास, गोविंद और चार आदमी रामनिवास के पिछवाड़े में छुपकर जा बैठे। जग्गू काला नक़ाब ओढ़े दीवार पर से उतर आया, पिछबाड़े में एक जगह खोदने लगा। तभी उसके चारों तरफ़ काल के दूतों जैसे कई आदमी जा खड़े हुए। जग्गू भागने के लिए तैयार हो उठ खड़ा हुआ।

रामनिवास ने ललकार कर पूछा—"क्यों जग्गू! मिट्टी की मटकी भी ले आये हो?" इन शब्दों के साथ उसने नक़ाब खींच दिया। मिट्टी की मटकी फ़िसल कर नीचे जा गिरी। उसमें कौड़ियाँ, बालों की रस्सी, गुड़िया और सूखे नींबू थे।

गोविंद ने गुस्से में आकर जग्गू की पीठ पर दे मारा। जग्गू रामनिवास के पैरों पर गिर पड़ा। रामनिवास ने जग्गू के हाथ-पैर बँधवा दिये, दूसरे दिन सारे गाँववालों को बुलवा कर सब के सामने उसके मुंह से सारी बातें कहलवाईं।

गाँववालों ने जग्गू को खूब पीटा, उसके दांत उखड़ गये। उस दिन से जग्गू ने मन्त्र-तंत्र करना छोड़ दिया।

व्यर्थ उपहार

कांचीपुर का शासक कांचन वर्मा कलाकारों को क़ीमती पुरस्कार देकर उनका सम्मान करता था। उन पर राजा की मुहर होती थी। पुरस्कृत व्यक्तियों को उन उपहारों को सदा के लिए अपने पास रखना पड़ता था, उन्हें बेचना मना था।

एक बार कांचन वर्मा ने वेदशर्मा नामक एक पंडित को अपने कंठ का रत्नहार पुरस्कृत किया। एक जून के लिए खाना मयस्सर न होनेवाले वेदशर्मा ने राजा से निवेदन किया—"महाराज! यह व्यर्थ उपहार मुझे नहीं चाहिए।"

राजा को क्रोध एवं आश्चर्य भी हुआ। उसने वेदशर्मा से इसका कारण पूछा। वेदशर्मा ने अपनी दरिद्रता की कहानी सुनाई।

राजा ने समझ लिया कि वह जो पुरस्कार देता है, वे राजा के बड़प्पन को ज़रूर प्रकट करते हैं, मगर उन्हें प्राप्त करनेवालों के लिए किसी काम के नहीं होते। उस समय से वह उत्तम कलाकारों के उपयोग में आनेवाले पुरस्कार देने लगे।

जो मरकर जिंदा रहा!

रामू ने अपने जीवन में अनेक प्रकार के अनुभव प्राप्त किये। जब वह जवान था, तब उसने एक ज़ादूगर के यहां नौकरी की। अपनी अट्ठारह साल की उम्र में एक फोटोग्राफ़र के यहां काम किया। इसके बाद कुछ दिन दवाइयों की दूकान में काम करता रहा, इस प्रकार उसने जो कुछ धन इकट्ठा किया उससे ख़ुद दवाइयों की दूकान खोल दी।

रामू जब पचास साल का था, तब हैजे के शिकार हो उसके घर के सभी लोग मर गये। रामू जीवन से विरक्त हो घर छोड़ गेरुए वस्त्र धारण करके एकतारा पर कीर्तन गाते चल पड़ा।

रामू यों घूमते-घूमते एक गाँव के समीप पहुँचा। भयंकर आंधी चली। रास्ते के निकट एक श्मशान वाटिका थी जिसमें एक कुटी थी। वह कुटी लाश जलाने आनेवाले लोगों के ठहरने के लिए बनाई गई थी। रामू उस कुटी में पहुँचा। चारों तरफ़ अंधेरा फैलता जा रहा था। रामू ने बाहर झांककर देखा। समीप में एक जनाजे पर उसे लाश दिखाई दी। लाश के पास कोई न था। संभवतः लाश ढोकर लानेवाले लोग जलावन आदि लाने के लिए चले गये थे।

रामू शव की ओर देखता रहा, तभी उसे लाश के भीतर से कोई खुर्राहट जैसी ध्वनि सुनाई दी। उसे लगा कि वह लाश अपने बंधनों से छुटकारा पाना चाहती है। यदि कोई दूसरा व्यक्ति होता तो लाश के हिलते देख डर के मारे भाग खड़ा हुआ होता। मगर रामू निडर था। उसने लाश के निकट जाकर अपनी थैली में से चाकू निकला, लाश के बंधन काट दिये। लाश अपने हाथ-पैर मारने लगी। रामू ने

ए. सी. सरकार, जादूगर

उसकी प्रथम चिकित्सा की जिससे लाश में साँस चलने लगी। उसका प्रयत्न सफल रहा, मरा हुआ व्यक्ति ज़िंदा हो उठा। वह आँखें खोल उठ बैठा।

राम् ने उससे पूछा—"तुम कौन हो?"

वह तीस साल का युवक था। उसने राम् को अपनी कहानी सुनाई। उसका नाम श्याम है। वह उसी गाँव का एक किसान है। उस दिन सवेरे वह अपना खेत जोत रहा था, साँप ने उसे डस दिया। मंत्र फूंके गये, मगर कोई फ़ायदा न रहा। बस, इसके बाद क्या हुआ श्याम को कुछ पता नहीं है।

आंधी-वर्षा जैसे अचानक हुई, वैसी ही जल्दी थम गई। राम् ने देखा कि गाँव से कुछ लोग लालटेन लेकर श्मशान की ओर चले आ रहे हैं, झट से राम् श्याम् को झोंपड़ी के अंदर ले गया।

लोगों ने श्मशान में आकर देखा, जनाजे को खाली देख डर गये। सोचा कि पिशाच उठा ले जाकर खा गये होंगे। इसलिए लाश को जलाने जो लकड़ी लाये थे, वहीं पर छोड़ भाग गये।

"ये लोग मूर्ख मालूम होते हैं। तुम्हारे भीतर चलने-फिरने की शक्ति आने पर मैं ही तुम्हें तुम्हारे घर पहुँचा दूंगा।" राम् ने समझाया।

"मैं नहीं जानता कि मेरी हालत क्या होनेवाली है? अगर मैं ज़िंदा न होता तो अच्छा होता! मेरी माँ, पत्नी और बच्चे मुझे अपनाने से इनकार कर बैठेंगे। सोचेंगे कि मेरे कलेवर के भीतर कोई पिशाच घुस आया है। वे एक दम अंध विश्वासी हैं।" श्याम ने रोनी सूरत बनाकर कहा।

"तुम घबराओ मत! तुम्हारी मदद के लिए मैं जो हूँ। अगर तुम्हारे घरवालों ने तुम्हें स्वीकार न किया तो हम दोनों मजे से कीर्तन गाते भ्रमण करेंगे।" राम् ने सांत्वना दी।

सवेरा हुआ। राम् श्याम को उसके घर ले गया। अपने पति को ज़िंदा देख

श्याम की पत्नी चीख उठी। उसने झट से किवाड़ बंद किये। फिर किसी ने उसकी ओर झांककर न देखा।

"आप देख रहे हैं न? मेरे जीने से फ़ायदा क्या रहा?" श्याम ने व्यथापूर्ण स्वर में पूछा।

"मैं इसका फ़ैसला करूंगा, तुम सब्र करो।" रामू ने कहा।

थोड़ी देर बाद अचानक एक खिड़की खुल गई। श्याम की माँ ने बाहर झांककर देखा। श्याम ने अपनी माँ की ओर देखा, तब उसने अपने बेटे को प्रणाम करके कहा–"हे पिशाच! तुम हमको सताने क्यों आये हो? श्याम की आत्मा की शांति के लिए हम ठाठ से श्राद्ध करेंगे। तभी तुम्हें भी पिंड दान करेंगे। मेहर्बानी करके हमें सताओ मत। हम तो अनाथ हो गये हैं।"

रामू ने आगे बढ़कर समझाया–"माँ, सचमुच ये तुम्हारे बेटे हैं। ईश्वर की कृपा से फिर से ज़िंदा हो गया है। मेरी बात पर यक़ीन करो।"

ग्रामवासियों ने रामू से पूछा–"हम तुम्हारी बातों पर कैसे यक़ीन करें? कल रात को लाश को पिशाच खा रहे थे, हमने अपनी आँखों से देखा है।"

"माँ! मैं तुम्हारा बेटा श्याम हूँ। मैं फिर से ज़िंदा हो गया। मुझे तुम्हारे साथ रहने दो। भगाओ मत!" श्याम ने कई प्रकार से विनती की, पर उसकी माँ का अंध विश्वास से भरा हुआ दिल द्रवित न हुआ।

इस बीच कई लोग वहाँ पर इकट्ठे हुए। लेकिन वे सब डर के मारे थोड़ी दूर जा खड़े हुए। उनमें गाँव का मुखिया भी था। श्याम ने उससे गिड़-गिड़ाकर निवेदन किया कि उसे अपने परिवार के साथ मिलकर जीने का मौक़ा दिला दे।

पर मुखिया ने अपना संदेह प्रकट किया–"इस बात का क्या सबूत है कि तुम्हारे भीतर पिशाच ने प्रवेश नहीं किया

है? जरूर पिशाच ने प्रवेश किया है। वरना कहीं मृत व्यक्ति ज़िंदा हो सकता है?"

तब तक श्याम के परिवारवाले सब बरामदे में आ पहुँचे और श्याम की ओर आश्चर्य के साथ देखने लगे।

रामू ने ग्रामवासियों को समझाने की कोशिश की, उसने गंभीर होकर यों बताया: "अगर किसी भूत, प्रेत व पिशाच ने श्याम के भीतर प्रवेश भी कर लिया हो तो इससे होनेवाला कोई बड़ा नुक़सान भी नहीं है। मैं तांत्रिक हूं, किसी भी प्रकार के भूत-प्रेत व पिशाच को भगा सकता हूँ। लेकिन यदि तुम लोगों का यह संदेह हो कि श्याम केवल कलेवर मात्र है और उसके अन्दर कोई भूत प्रवेश करके उसे नचा रहा है, तो मैं इसी क्षण उसे झूठा साबित कर सकता हूँ। तुम लोग जानते हो कि लाश से खून नहीं बहता, अगर श्याम के शरीर से खून निकले तो तुम्हें मानना होगा कि उसका शरीर शव नहीं है।"

इसके बाद रामू श्याम के पैरों के पास जा बैठा, जहां उसे सांप ने डस लिया था, उस जगह खून जमा था, उस जमे हुए खून को निकालकर उसके पैर को दबाया, फिर क्या था, उस जगह से खून की बूंदें गिरीं। तब रामू ने गांव के मुखिये से बताया—

"अब यह साबित हुआ कि श्याम ज़िंदा आदमी है। लेकिन मेरे मन में भी थोड़ी शंका है कि किसी पिशाच ने शायद इसके भीतर प्रवेश कर लिया हो। इसके वास्ते हमें मंत्र-तंत्र करने होंगे। कल शनिवार है, मंत्र-तंत्र के लिए बढ़िया दिन है। तब तक श्याम मेरे आश्रय में गाँव के शिवालय में रहेगा।"

रामू की शर्त को मुखिये के साथ गाँव के सभी लोगों ने मान लिया।

इसके बाद रामू श्याम को साथ ले निकट के शहर में चला गया। मंत्र तंत्र के लिए आवश्यक सामग्री—घड़े, सूखी घास, कंबल इत्यादि के साथ गुप्त रूप से

दवाइयों की दूकान से टैंक्चर अयोडीन, फोटो सामग्री बेचनेवाली दूकान से हाईपो टुकड़े भी ख़रीदा। उसने एक सफ़ेद कपड़े के टुकड़े को अयोडीन में तीलियों की मदद से डुबोया, तब उसे सुखाया। वह कपड़ा एक दम काला बन गया। फिर एक घड़े में पानी डालकर उसमें हाइपो के टुकड़े गलाया। यह काम गुप्त रूप से किया गया।

दूसरे दिन श्याम के शरीर से भूत को भगाने का काम शुरू हुआ। श्याम को सबके बीच बिठाया गया। उसके समीप में पानी से भरे दो घड़े रखे गये। उनमें हाइपो गलाये गये जलवाला घड़ा एक था, रामू ने श्याम के सामने बैठकर मंत्र-पठन किया। एक घंटे तक मंत्र पढ़ने के बाद रामू खड़े हो बोला—"इस वक़्त घड़े का पानी मंत्र जल हो गया है। उसकी शक्ति की अब हम परीक्षा लेंगे। यह मंत्र जल सभी प्रकार के गंदेपन को दूर कर साफ़ कर सकता है।"

इसके बाद रामू ने श्याम के वस्त्रों में छिपाये गये काले कपड़े के टुकड़े को निकाला, एक गिलास माँगकर लिया, उसे हाइपो जलवाले छोटे घड़े में डुबोया, तब उस जल में काले कपड़े के टुकड़े को धीरे से सरका दिया। कपड़े का काला रंग जाता रहा और वह एक दम उजला बन गया, जिससे सब लोगों पर मंत्र जल का प्रभाव प्रकट हो गया।

"तुम लोगों ने मंत्र जल की महिमा खुद देख ली है। इसी प्रकार इस जल से श्याम को नहलायेंगे तो यह भी पवित्र हो जाएगा।" इन शब्दों के साथ रामू ने बड़े घड़े के जल से श्याम को नहलवाया।

तब सब लोगों ने श्याम को साधारण मानव के रूप में स्वीकार कर लिया।

रामू ने इसके पूर्व दवाइयों की दूकान में तथा फोटोग्राफ़र के यहाँ भी काम किया था, इसलिए वह जानता था कि अयोडीन के धब्बों को हाइपो साफ़ कर सकता है।

प्रशांत जीवन

प्राचीन काल में एक गाँव में राघव नामक एक धनी था। जब वह साठ साल का हुआ तब उसके परिवार के सभी लोग मर गये। उस ज़िंदगी से विरक्त होकर राघव ने अपनी सारी संपत्ति गाँव की उन्नति के कार्यों के लिए समर्पित कर दी और प्रशांत जीवन बिताने के लिए जंगलों में चला गया।

एक घने जंगल में पहुँच कर एक तालाब के निकट राघव ने कुटी बनाई और कंद, मूल तथा फल खाकर शांतिपूर्वक अपना जीवन व्यतित करने लगा।

एक दिन वहाँ पर एक विचित्र घटना घटी। राघव एक झाड़ी में फल तोड रहा था, तब तक बाघ उसके पीछे से उसकी देह का स्पर्श करते चला गया। इसके पूर्व बाघ को गरजते देख एक लकड़हारा डर गया और एक पेड़ पर जा बैठा था। उसने इस दृश्य को देखा मगर राघव को बिलकुल इसका पता न था कि उसके पीछे से एक बाघ चला गया है।

लकड़हारे ने सोचा कि राघव साधारण मनुष्य नहीं है। वह पेड़ से उतर आया। राघव के पैरों पर गिर कर बोला– "महात्मा! मैं एक बड़ा परिवारवाला व्यक्ति हूँ; मैं अपनी गृहस्थी चला नहीं पाता हूँ। इससे तरने का कोई उपाय बता दीजिए।"

राघव ने लकड़हारे को उठा कर समझाया–"भाई, तुम अपनी मेहनत करते जाओ। तरने की बात तुम क्यों सोचते हो?"

लकड़हारे ने समीप के गाँव में जाकर राघव के बारे में बढ़ा-चढ़ाकर सुनाया। उस दिन से लोग जंगल में रहनेवाले

दिनेश अग्रवाल

राघव के दर्शन करके अपने पापों से मुक्ति पाने के लिए आने लगे। धीरे-धीरे लोगों की भीड़ बढ़ती गई। राघव का नाम दूर तक फैल गया।

राघव शांतिपूर्वक जीना चाहता था, मगर उसे जनता की समस्याएं और उनकी कठिनाइयों को विवश होकर सुनना पड़ता था। जनता ने राघव को राघवेन्द्र स्वामी बनाया और भगवान की भांति श्रद्धा से उसकी पूजा करने लगी। शनै शनै उसका नाम दूर दूर के गांवों तक फैल गया।

एक दिन दूर के एक गांव से सुंदर और कांता नामक दंपति राघवेन्द्र स्वामी के दर्शन करने निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर यात्रियों के वेष में जानेवाले चोरों से उनकी मुलाक़ात हुई। सुंदर की आकृति और उसकी दाढ़ी देखने पर चोरों के मन में एक विचार आया। भूख से परेशान उस दंपति को चोरों ने अपने थैलों से निकाल कर खूब खाना खिलाया और उन्हें गेरुए रंग के वस्त्र पहना दिये। इसके बाद चोरों ने भी गेरुए वस्त्र पहन लिये।

उसी दिन चोरों ने उसी प्रदेश में एक छोटा-सा आश्रम बनाया, सुंदर को राघवेन्द्र स्वामी के प्रिय शिष्य के रूप में प्रतिष्ठित किया। सुंदर ने आपत्ति उठाई तो उसे मार डालने की धमकी दी। चोरों ने सुंदर के शिष्यों का अभिनय करते अपने नये स्वामी के बारे में चारों तरफ़ खूब प्रचार किया।

सुंदर का आश्रम राघव के आश्रम से बहुत ही दूर था। इसलिए जो लोग राघवेन्द्र स्वामी के दर्शन करने जा नहीं पाते थे, वे इस छोटे राघवेन्द्र स्वामी के दर्शनों के लिए आ जाते थे। चोरों ने सुंदर को थोड़ी-सी इंद्रजाल की विद्याएँ सिखाईं। सुंदर खाली हाथ मल कर भभूत की सृष्टि कर सकता था। मुंह से शिवलिंग मंगवा देता था। ये अद्भुत देख भक्त तन्मय हो जाते और छोटे

राघवेन्द्र स्वामी को भेंट चढ़ा देते । चोर उन भेंटों को हड़प लेते थे । राह लूटने की अपेक्षा चोरों को यह धंधा कहीं ज्यादा लाभदायक और आदर का प्रतीत हुआ ।

धीरे-धीरे सर्वत्र यह प्रचारित हुआ कि बड़े राघवेन्द्र स्वामी की अपेक्षा छोटे राघवेन्द्र स्वामी ज्यादा महिमाएँ रखते हैं । इस कारण जंगल में बड़ी दूर पर स्थित राघव के भक्तों की संख्या घट कर सुंदर के भक्तों की संख्या दिन प्रति दिन बढ़ती ही गई ।

राघव के मन में यह संदेह हुआ कि कोई उसके नाम का उपयोग करके जनता को धोखा दे रहा है । वह 'स्वामी' तो जरूर बन गया है, मगर उसने कभी किसी को किसी प्रकार का धोखा न दिया था । उसके मन में यह जानने की इच्छा हुई कि यह नया स्वामी कौन है?

इस बात का पता लगाने के लिए राघव एक दिन तड़के उठकर सुंदर के आश्रम की ओर चल पड़ा । चोरों ने अन्य भक्तों की तरह उसका भी स्नेहपूर्वक स्वागत किया ।

सुंदर ने भक्तों के सामने अपनी महिमाओं का प्रदर्शन किया, तब वे सब वहाँ से चले गये । इसके बाद राघव ने चोरों की अनुमति लेकर अकेले सुंदर से

देर तक बातें की । सुंदर ने स्वामी के ओहदे में ही राघव के प्रश्नों का उत्तर दिया ।

राघव ने सुंदर से पूछा—"महात्मा! मैं आपके गुरु राघवेन्द्र स्वामी के बारे में जानना चाहता हूँ । आप बताने की कृपा करेंगे?"

"बेटा! मैं उनके बारे में क्या बता सकता हूँ? वे एक पहुँचे हुए महात्मा और महान तपस्वी हैं । भगवान का साक्षात्कार प्राप्त ज्ञानी हैं ।" सुंदर ने आँखें मूंद कर सहजभाव से उत्तर दिया ।

"क्या आप उनके पूर्वाश्रम का परिचय दे सकते हैं?" राघव ने फिर पूछा ।

"पगले! उनका पूर्व नाम ही क्या है? उनके जन्म के समय ही आकाशवाणी ने उन्हें 'राघवेन्द्र स्वामी!' कहकर पुकारा था। वे नकली साधू नहीं, जन्मजात सिद्ध पुरुष हैं।" सुंदर ने जवाब दिया।

"आप ने उन्हें कितने दिन पूर्व देखे थे?" राघव ने पूछा।

"मैं जब चाहूँ तब ध्यान करके उनकी दिव्य मूर्ति के दर्शन कर सकता हूँ!" सुंदर ने कहा।

"तब तो आप ने मुझे पहचाना है न?" राघव ने फिर पूछा।

"तुम कौन हो, बेटा?" सुंदर का सवाल था।

"स्वामी! आप इस वक़्त जिनकी प्रशंसा कर रहे हैं, वही राघवेन्द्र स्वामी हूँ।" राघव ने कहा।

ये शब्द सुनने पर सुंदर चकित रह गया।

"आप क्यों इस प्रकार लोगों को दगा दे रहे हैं?" राघव ने पूछा।

सुंदर ने विस्तार के साथ बताया कि चोर कैसे उसकी आड़ में जनता को धोखा दे रहे हैं। उसने राघव से स्पष्ट बताया कि चोरों के चंगुल से बचकर भागने में भी उसे कोई आपत्ति नहीं है। यदि चोरों से उसकी रक्षा कर सके तो वह ज़िंदगी भर उनके प्रति कृतज्ञ रहेगा।

उस दिन रात को जब चोर नशे में मदहोश थे तब राघव सुंदर तथा उसकी पत्नी को भी साथ लेकर चल पड़ा। बड़ी दूर की यात्रा करके वे एक शहर में पहुँचे और वहाँ पर कोई काम-धंधा करते अपने दिन निश्चिंतता के साथ काटने लगे।

घने जंगल के बीच राघव को जो मानसिक शांति प्राप्त न हुई, वह भीड़-भक्कड़वाले शहर में प्राप्त हुई। क्योंकि वहाँ पर उसके जान-पहचान का आदमी कोई न था और न उसके बारे में कोई सोचने व तंग करनेवाला ही था।

सूर्योदय के साथ वानर सेना तथा राक्षस सेना के बीच युद्ध छिड़ गया। यथा प्रकार राक्षसों ने वानरों पर बाण, खड्ग, परशु इत्यादि आयुधों का प्रयोग किया। वानरों ने भी राक्षसों पर वृक्ष तथा शिलाओं का प्रयोग करना प्रारंभ किया। दोनों ओर खून की नदियाँ बहने लगीं, जिससे धूल थम गई।

राक्षसों के प्रहारों से वानर सेनाएँ घबरा गईं, इस पर उनकी मदद के लिए रामचन्द्रजी ने धनुष धारण कर राक्षस सेनाओं के बीच प्रवेश किया और अग्नि बाणों की उन पर वर्षा की। रामचन्द्रजी के बाणों के सामने राक्षस ठहर न सके। वे रामचन्द्रजी के बाणों के प्रयोग को देख न पाते थे, पर उनके परिणाम से अवगत हो जाते थे। पेड़ों का हिलना दिखाई देता है, पर झंझावत का पता नहीं चलता है न? इस प्रकार थोड़े क्षणों में असंख्य राक्षस मारे गये।

रामचन्द्रजी ने अपने समीप में स्थित सुग्रीव, विभीषण, जांबवान, हनुमान आदि से कहा–"अकेले शिवजी को छोड़ कोई भी मेरे जैसे बाणों का प्रयोग करना नहीं जानते।"

युद्ध क्षेत्र में राक्षसों का जो हत्याकांड हो रहा था, यह समाचार लंका की राक्षस नारियों को मिला। मृत व्यक्तियों में उन नारियों के पति-पुत्र थे। वे सब दहाड़ें मारकर इस हत्याकांड का कारणभूत

३४. इंद्र की सहायता

एक ओर रामचन्द्रजी दावानल की भांति राक्षस सेना को जला रहे थे, दूसरी ओर रावण अपने समीप में स्थित महोदर, महापार्श्व और विरूपाक्ष से यों डींग हांक रहा था–"मैं अभी अभी खर, कुंभकर्ण, प्रहस्त तथा मेघनाद का वध करनेवाले शत्रु का संहार कर बैठूंगा। मेरे बाण पृथ्वी तथा आकाशों को अंधकार में डुबो देंगे। वानर सेना के समस्त दलों का मटिया मेट कर डालूंगा। ये मनुष्य और वानर शायद मेरे प्रताप को नहीं जानते।"

शूर्पणखा की निंदा करने लगीं। वे सोचने लगीं–'शूर्पणखा की बातों पर कान दे रावण नाहक़ सीताजी को क्यों उठा लाया? उनके साथ शत्रुता क्यों मोल ली? सीताजी ने तो उसकी अधीनता को स्वीकार नहीं किया? सीताजी को उठा ले जाने का प्रयत्न करनेवाला विराध क्या रामचन्द्रजी के हाथों में नहीं मरा? इस युद्ध में निश्चय ही रामचन्द्रजी की विजय होगी! रामचन्द्रजी की शक्ति का पता शायद अब तक रावण को नहीं लगा।' यों सोचते राक्षस नारियाँ अपने पति, भाई और पुत्रों की मृत्यु पर शोक मचाने लगीं।

रावण जिस रथ पर सवार था, उसमें आठ घोड़े जुते हुए थे। रावण रथ पर भयंकर रूप से तेजोवान था। उसके पीछे विभिन्न रथों पर महापार्श्व, महोदर तथा विरुपाक्ष भी सवार थे। रावण ने वानर सेना के भीतर घुसकर भयंकर युद्ध प्रारंभ किया।

रामचन्द्रजी ने राक्षस सेना के बीच जैसा विध्वंस किया, वैसा विध्वंस रावण ने वानर सेना के बीच किया। इसे देख सुग्रीव ने वानर सेना की रक्षा का भार सुषेण को सौंप दिया और उसने भी भयंकर युद्ध करने का निश्चय किया। राक्षस सेना के बीच घुसकर भयंकर गर्जन करते हुए कई राक्षस सैनिकों को मार

डाला, तब राक्षस वीरों को मारने के लिए सन्नद्ध हो गया।

इस दृश्य को देख विरूपाक्ष रथ पर से समीप में स्थित हाथी पर कूद पड़ा और वानर सेना में पहुंचा। वानर सेना के मुख द्वार पर उसे सुग्रीव ने रोका। विरूपाक्ष ने सुग्रीव पर बाणों का प्रहार किया। विरूपाक्ष का वध करने का निश्चय करके सुग्रीव ने एक बहुत बड़ा वृक्ष उखाड़कर उसके हाथी के मुख पर दे मारा। उस प्रहार से हाथी चींकर कर उठा और पीछे गिरकर मर गया। विरूपाक्ष झट से हाथी पर से उतर पड़ा, तलवार और ढाल लेकर सुग्रीव पर तलवार का प्रहार किया। इसके बाद दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ। आखिर सुग्रीव ने विरूपाक्ष को ऐसा तंग किया कि वह अपनी नाक व मुंह से खून उगलते दम तोड़ बैठा।

विरूपाक्ष की मृत्यु के बाद उसके स्थान पर वानर सेना का निर्मूल करने रावण ने महोदर को नियुक्त किया। महोदर प्रलय कालीन मेघों की भांति गर्जन करते बुरी तरह से वानर सेना का संहार करते आगे बढ़ा, तब सुग्रीव ने उसे रोका, एक परिघा प्राप्त कर उसकी मदद से महोदर के रथ के घोड़ों को मार

डाला। महोदर रथ से उतर पड़ा, गदा हाथ में ले सुग्रीव पर टूट पड़ा।

शीघ्र ही सुग्रीव के हाथ की परिघा तथा महोदर का गदा दोनों टूट गये। तब दोनों द्वन्द्व युद्ध करने लगे। थोड़ी ही देर में दोनों थक गये और युद्ध भूमि में जो भी आयुध मिला, अपने हाथ ले लड़ने लगे। इस बीच महोदर के हाथ की तलवार सुग्रीव के ढाल में फँस गई। महोदर तलवार को निकालने की कोशिश कर रहा था, वह हताश हो खींचातानी कर ही रहा था कि मौक़ा पाकर सुग्रीव ने उसका सर काट डाला। ठीक उसी वक़्त महापार्श्व अंगद की

महापार्श्व के वक्ष पर मुक्के मारकर उसे बेदम कर दिया ।

अंत में रावण ने स्वयं युद्ध का दायित्व अपने ऊपर लिया । उसने वानरों के साथ युद्ध करना नहीं चाहा । इन सारी लड़ाइयों के मूल कारक रामचन्द्रजी का संहार करने का निश्चय कर लिया । उसने रामचन्द्रजी की ओर बढ़ते हुए वानरसेना पर तामसास्त्र का प्रयोग किया । वह एक प्रचंड अस्त्र था । उसके आघात से वानर बुरी तरह से घायल हो गये । वे भयभीत हो भागने लगे, तब रामचन्द्रजी युद्ध के लिए सन्नद्ध हो आगे आये । उनके साथ लक्ष्मण भी था ।

सेना पर टूट पड़ा और उसे तहस-नहस करने लगा । अंगद ने क्रुद्ध होकर लोहे का गदा बिरूपाक्ष के उपर फेंक दिया । उसके प्रहार से विरूपाक्ष और उसका सारथी भी बेहोश होकर गिर पड़े । उस समय गवाक्ष तथा जांबवान ने पहाड़ीं शिलाएं उठाकर महापार्श्व के रथ को चूर-चूर किया और उसके घोड़ों को मार डाला ।

इस बीच महापार्श्व होश में आया और उसने गवाक्ष तथा जांबवान पर बाणों की वर्षा की । इस पर कुपित हो अंगद ने दूर से ही एक परिघा फेंक दी, फिर निकट आकर थोड़ी देर युद्ध किया, आखिर

रावण पर सर्व प्रथम लक्ष्मण ने ही बाणों का प्रयोग किया, मगर रावण ने उसके सारे बाण काट डाले, फिर रामचन्द्रजी की क्षोर मुड़कर उन पर बाणों की वर्षा की । रामचन्द्रजी ने अपने तीक्ष्ण बाणों से रावण के समस्त बाणों को तोड़ डाला । दोनों के बीच भयंकर युद्ध हुआ । उस युद्ध में एक दूसरे के अस्त्रों का खंडन करने लगे ।

इसके बाद रावण ने रामचन्द्रजी पर असुरास्त्र का प्रयोग किया । वह अस्त्र अत्यंत भयंकर था । रामचन्द्रजी ने आग्नेयास्त्र का प्रयोग करके उसे ध्वंस किया । उसे

देख सुग्रीव आदि वानर वीर बहुत ही प्रसन्न हुए।

इसके अनंतर रावण ने कुपित होकर रौद्रास्त्र का प्रयोग किया। रामचन्द्रजी ने गांधर्वास्त्र का प्रयोग करके उसे नष्ट कर दिया। इस पर रावण ने सौरास्त्र का प्रयोग किया, रामचन्द्रजी ने उसे भी तोड़ डाला।

इसके बाद दोनों ने साधारण बाणों के साथ युद्ध किया। रामचन्द्रजी ने अपने बाणों के द्वारा रावण को घायल बनाकर थोड़ी देर विश्राम किया।
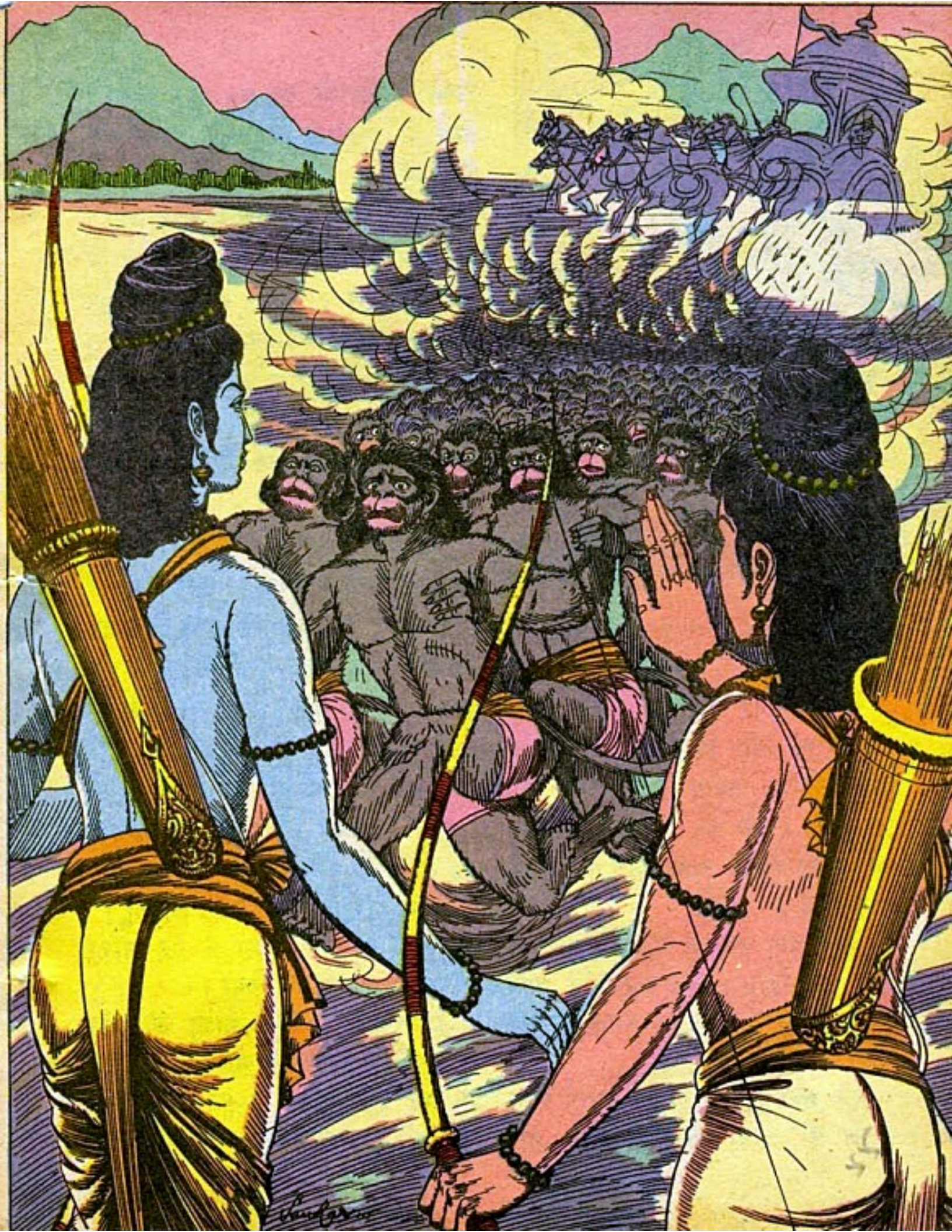
तब लक्ष्मण ने बाणों का संधान करके रावण की ध्वजा को तोड़ डाला और रावण के सारथी का सर काट डाला। साथ ही रावण के धनुष के टुकड़े-टुकड़े कर दिये।

लक्ष्मण थोड़ी देर विश्राम करने लगा। इस बीच विभीषण ने रावण के रथ के घोड़ों पर गदे का प्रहार करके उन्हें मार डाला। रावण विभीषण पर रुष्ट हुआ। वह रथ से उतर पड़ा और विभीषण पर एक शक्ति का प्रयोग किया। पर लक्ष्मण ने अपने बाणों से उस शक्ति को बीच में ही काट डाला।

इस बार रावण ने एक और ज़बर्दस्त शक्ति को हाथ में लिया। लक्ष्मण चट से विभीषण के आगे जा खड़ा हुआ। रावण उस शक्ति का प्रयोग विभीषण पर करना चाहता था, इस बीच लक्ष्मण ने रावण को अपने बाणों से ढंक दिया।

रावण ने क्रुद्ध हो लक्ष्मण से कहा—"तुमने विभीषण की रक्षा की, इसलिए इस शक्ति का प्रयोग मैं तुम पर कर देता हूँ। यह तुम्हारे प्राण लेकर छोड़ेगी।" इन शब्दों के साथ रावण ने उस शक्ति का प्रयोग लक्ष्मण पर किया।

रामचन्द्रजी ने उस शक्ति को शाप दिया—"तुम व्यर्थ हो जाओगी!" फिर भी वह सीधे जाकर लक्ष्मण के वक्ष में जा घुसी। लक्ष्मण शक्ति के लगते ही

बेहोश हो नीचे गिर पड़ा। शक्ति उसके शरीर में घुसकर नीचे दूर गिर पड़ी। रामचन्द्रजी ने क्रोध और दुख में आकर उस शक्ति को अपने हाथों से तोड़ डाला। उस वक़्त रावण रामचन्द्रजी पर लगातार बाणों की वर्षा कर रहा था। रामचन्द्रजी ने इसकी परवाह नहीं की, लक्ष्मण का आलिंगन करके हनुमान, सुग्रीव आदि वानरों से बोला–"तुम लोग लक्ष्मण पर निगरानी रखे रहो, अब रावण का वध निश्चित रूप से करना होगा।"

मगर लक्ष्मण का बुरा हाल देख रामचन्द्रजी के भीतर युद्ध करने की इच्छा जाती रही। इस बात को भाँप कर सुषेण ने रामचन्द्रजी से कहा–"रामचन्द्रजी, लक्ष्मण अभी तक जीवित हैं। आप चिंता न करें।" फिर हनुमान से बोला–"तुम पहले जिस औषध को लाये थे, उस औषधी पर्वत के दक्षिणी शिखिर पर स्थित औषध को लेते आओ। हमें तत्काल लक्ष्मण को जीवित बनाना होगा।"

हनुमान ओषधी पर्वत पर पहुँचा, पर वह आवश्यक औषध को पहचान न पाया। इस कारण पर्वत के दक्षिणी शिखर को ही उखाड़ कर उठा लाया। तब सुषेण से बोला–"तुमने जिस औषध की बात कही थी, उसे मैं पहचान न पाया। मैं सारे शिखर को उठा लाया हूँ। तुम्हारे लिए जिस औषध की ज़रूरत हो, उसे ले लो।"

सुषेण हनुमान की बुद्धिमत्ता पर प्रसन्न हुआ और औषध को ऊपर निकाला। इसके बाद उसने उस औषध के रस को निचोड़ कर लक्ष्मण की नाक में डाल दिया। लक्ष्मण होश में आकर उठ खड़ा हुआ।

रामचन्द्रजी के नेत्रों में आनंद बाष्प छलक पड़े। उन्होंने लक्ष्मण के साथ आलिंगन करके कहा–"लक्ष्मण! तुम मर कर ज़िंदा हो गये हो! तुम अगर सचमुच मर गये होते तो सीताजी से मेरा क्या वास्ता था? यह युद्ध ही में क्यों

करता? मेरे भाग्यवश तुम जीवित हो गये हो।"

"भातृवर, आप को इस प्रकार निराश नहीं होना चाहिए था। आप ने वचन दिया है कि रावण का वध करके विभीषण को लंका के सिंहासन पर बिठायेंगे। आप कृपया मेरे वास्ते ही सही, निराशा को त्याग कर रावण का वध कर डालिए। विभीषण को जो वचन दिया है, उसे पूरा कर लीजिए! मैं चाहता हूँ कि सूर्यास्त होने के पहल रावण का वध हो जाय!" लक्ष्मण ने रामचन्द्रजी को समझाया।

लक्ष्मण के मुंह से ये शब्द सुनते ही रामचन्द्रजी ने अपने धनुष पर बाण चढ़ा कर रावण पर प्रयोग किया। रामचन्द्रजी तथा रावण के बीच जो युद्ध हुआ, उसमें एक तृटि दिखाई दी। रावण रथ पर आरूढ़ हो युद्ध कर रहा था और रामचन्द्रजी जमीन पर पड़े हो युद्ध कर रहे थे।

उस तृटि की पूर्ति करने के लिए इन्द्र ने अपने सारथी मातलि के द्वारा अपने रथ को पृथ्वी पर भेज दिया। उसमें सोने की नक्काशियाँ की गई थीं। कई घंटियाँ बंधी हुई थीं। वैडूर्य से निर्मित एक आभूषण था। वह प्रात:कालीन सूर्य की भांति प्रकाशमान था। मातलि उस रथ को लेकर रामचन्द्रजी के पास आया और उनसे यों बोला :

"रामचन्द्रजी! आप की विजय की कामना करते हुए इन्द्रदेव ने यह रथ आप के पास भेजा है। इसके साथ यह इंद्रधनुष, कवच, बाण तथा शक्ति भी इन्द्र ने आप को भेजी है। प्राचीन काल में मेरे सारथ्य में इन्द्र ने इसी रथ पर सवार हो दानवों का वध किया था। अब आप इस पर आरूढ हो रावण का संहार कीजिए।"

मातलि के वचन सुनकर रामचन्द्रजी ने उस रथ की परिक्रमा की, उसे प्रणाम करके उस पर आरूढ़ हो गये। इसके बाद राम-रावण के बीच ऐसा अद्भुत युद्ध हुआ जो देखते ही बनता था!

संथालों का विद्रोह

सुन्दरबान नामक प्रदेश में गंगानदी अनेक उप नदियों में बंटकर समुद्र में गिरती है। वह सारा प्रदेश एक महा जंगल है, जो बंगाल के मशहूर बाघों के लिए तथा नदियाँ भयंकर मगर-मच्छों के लिए आश्रय हैं।

यह जंगल संथाल नामक आदिवासियों का निवास स्थान है। वे उस जंगल में अनेक मुसीबतों का हिम्मत के साथ सामना करते हुए अपनी ज़िंदगी बसर करते हैं। उन लोगों ने संथाल परगणा नाम से प्रसिद्ध प्रदेश से लेकर वीरभूम तक अपने स्थिर निवास बनाये हैं।

ये संथाल जिस जमीन पर खेती करते थे, उस जमीन के मालिक जमीन्दारों को १८३८ तक दो हज़ार रुपये लगान चुकाया करते थे, लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी नाम से अंग्रेज़ों के अधिकार जमाने के बाद लगान दो हज़ार से चौंतालीस हज़ार रुपये तक बढ़ाया गया। जो संथाल कर न चुका पाते थे, उन्हें जमीन्दार और पुलिस दोनों नाना प्रकार से सताने लगे थे।

उन अत्याचारों से तंग आकर संथाल विद्रोह करने पर तुल गये। १८५७ में सिपाही विद्रोह हुआ था, उसके दो वर्ष पूर्व ही संथालों ने यह घोषणा की कि हम भगवान के आधिपत्य को छोड़ किसी के अधिकार को स्वीकार न करेंगे। इसके बाद उन लोगों ने कंपनीवालों के दफ़्तर जलाकर अपने को स्वतंत्र घोषित किया।

ईस्ट इंडिया कंपनी के सैनिकों ने संथालों के जंगलों को घेर लिया, मगर संथालों के गाँवों का पता लगाना आसान न था। सैनिक ऊँचे पेड़ों पर चढ़ जाते, जहाँ से धुआँ निकलता वहाँ पर संथालों के होने का अनुमान करके उन गाँवों पर हमला कर बैठते थे।

संथालों को थर्रा देने के लिए कम्पनी के सैनिकों ने एक अत्यंत क्रूर पद्धति का सहारा लिया। पालतू हाथियों को शराब पिलाकर नशा चढ़ने पर उन्हें दलों के रूप में संथालों के गाँवों पर उकसा देते थे। उस वक्त जो नारियाँ व बच्चे गाँव छोड़कर भाग न जाते थे, वे हाथियों के पैरों के नीचे कुचलकर भयंकर मृत्यु के शिकार हो जाते थे।

विद्रोही संथालों ने धनुष-वाण लेकर सैनिकों का सामना किया। उनका कठोर नियम यह था कि दुश्मन को पीठ नहीं दिखानी है। कंपनी के सैनिकों की बंदूकों की गोलियों के सामने संथालों के बाण बेकार साबित हुए और सैंकड़ों की संख्या में संथाल मारे गये।
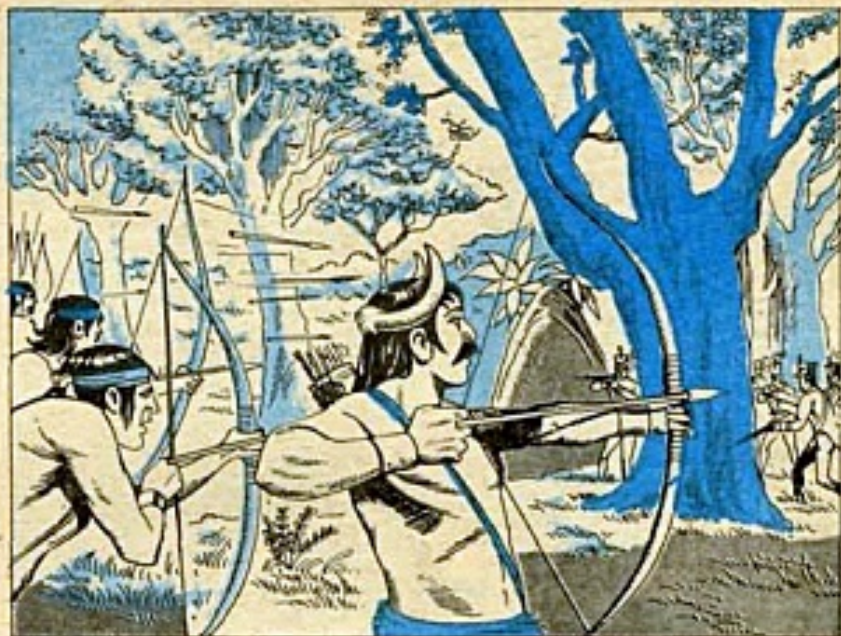
अंत में सैनिकों ने संथालों का जो प्रधान केन्द्र था, उस गाँव पर आक्रमण किया। वहाँ के घर की एक दीवार के छेदों से सैंकड़ों बाणों ने आकर असंख्य सैनिकों के प्राण ले लिये।

आख़िर सैनिक उस घर के निकट स्थित पेड़ों पर चढ़कर बंदूक़ों की गोलियों की वर्षा करने लगे। उसके जवाब के रूप में घर के भीतर से सनसनाते बाण आकर सैनिकों के शरीर छलनी करने लगे।
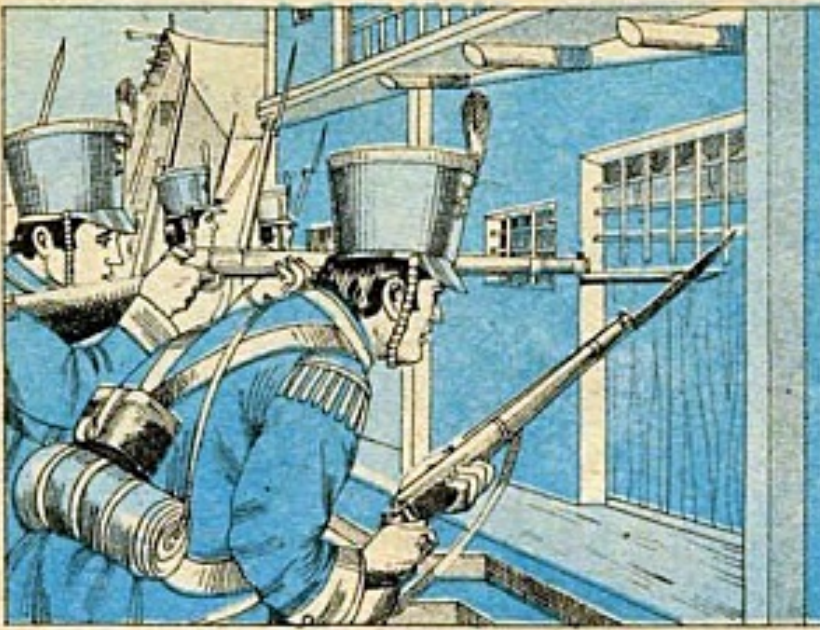
सैनिकों ने उस घर पर सैकड़ों-हज़ारों गोलियाँ चलाईं। धीरे धीरे घर से उन पर बरसनेवाले बाणों की संख्या घटती गई, आखिर एक ही बाण बंदूक की उन गोलियों का जवाब देता रहा। सैनिक पेड़ों से उतर पड़े, घर को घेरकर चिल्ला उठे– "तुम लोग आत्म समर्पण कर दो।"

थोड़े क्षण बाद घर से निकलनेवाला वह एक बाण भी बंद हो गया। भीतर सुनसान था। सैनिकों ने दर्वाजे तोड़कर अन्दर प्रवेश किया। वहाँ पर अनेक संथाल मरे पड़े थे। कुछ लोग बुरी तरह से घायल हो मौत की घड़ियाँ गिन रहे थे। लेकिन उनके बीच एक वृद्ध संथाल खड़ा हुआ था। उसका बायाँ हाथ बंदूक की गोली से घायल हो चुका था।
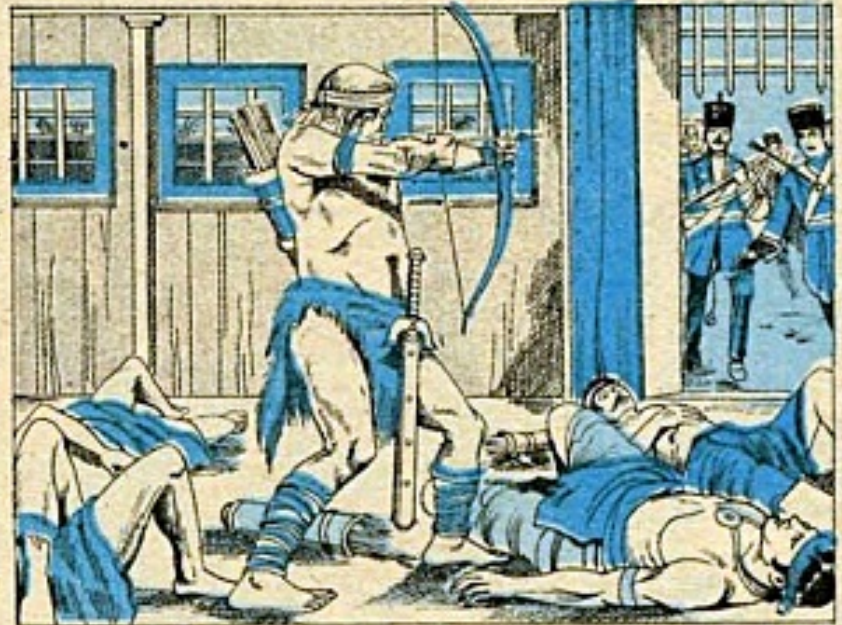
सैनिक उस वृद्ध को बंदी बनाने को आगे बढ़े, पर वृद्ध संथाल ने झट से तलवार निकाली, जो भी सैनिक निकट आया, उसे काटता गया। सैनिक हाहाकार करते बाहर भाग आये और दूर से बंदूक चलाकर उसे मार डाला। इस तरह संथालों का विद्रोह क्रूरता के साथ दबा दिया गया। मगर वह विद्रोह भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई में एक अत्यंत प्रधान घटना के रूप में प्रसिद्ध हो गया।

कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता

कहानी का सुंदर शीर्षक देकर रु. २५ जीतिए!

?

वेय राजवंश के शासन काल में नु युन नामक व्यक्ति ने नागरिक विभाग में काम करते हुए अपने प्रदेश के लोगों को ही उस विभाग में नियुक्त किया। यह समाचार मिलने पर सम्राट मिंग ने उसे पकड़ लाने को सिपाहियों को भेजा।

जब नु युन सम्राट के पास जा रहा था, तब उसकी पत्नी ने उसे सलाह दी– "आप सम्राट से तर्क कीजिए, पर क्षमा न मांगियेगा।"

नु युन ने सम्राट से कहा–"परिचित लोगों को ही नौकरी में नियुक्त करना है। मैंने यही काम किया है। आप जांच करके देखिए कि वे दक्षता के साथ काम करते हैं या नहीं? यदि उनके कार्य में त्रुटियां हों तो उसका जिम्मेवार मैं हूं।"

नु युन के रिश्तेदारों को जब मालूम हुआ कि उसे सिपाही पकड़ ले गये हैं, तब वे सब रोने लगे, इस पर नु युन की पत्नी ने उन्हें समझाया–"आप लोग चिंता क्यों करते हैं? वे अभी लौट आयेंगे।" इसके बाद उसने अपने पति के लिए रसोई तक बनाई। उसके कथनानुसार उसका पति शीघ्र लौट आया।

★ ★ ★

उपर्युक्त कहानी के लिए बढ़िया शीर्षक कार्ड पर लिखकर, निम्न लिखित पते पर भेजें–"कहानी शीर्षक-प्रतियोगिता", चन्दामामा, २ & ३, आर्काट रोड़, मद्रास-६०००२६

कार्ड हमें अगस्त १० तक प्राप्त हों और उसमें फोटो-परिचयोक्तियां न हों। इसके परिणाम चन्दामामा के अक्तूबर '७७ के अंक में घोषित किये जायेंगे।

जून मास की प्रतियोगिता का परिणाम: "जियो और जीने दो"

पुरस्कृत व्यक्ति: श्री विजय कुमार अग्रवाल, बी. १४, न्यू क्वार्टर नं. १४४, बैरागढ़, भोपाल

फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता :: पुरस्कार २५)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अक्तूबर १९७७ के अंक में प्रकाशित की जायेंगी ।

★

Gopal Shroti S. Ravindran

★ उपर्युक्त फ़ोटो की सही परिचयोक्तियाँ दो-तीन शब्दों की हों और परस्पर संबंधित हों ।

★ अगस्त १० तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए. उसके बाद प्राप्त होनेवाली परिचयोक्तियों पर विचार नहीं किया जाएगा ।

★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियों को मिलाकर) २५ रु. का पुरस्कार दिया जाएगा ।

★ दोनों परिचयोक्तियाँ कार्ड पर लिखकर (परिचयोक्तियों से भिन्न बातें उसमें न लिखें) निम्नलिखित पते पर भेजें: चन्दामामा फोटो-परिचयोक्ति-प्रतियोगिता, मद्रास-२६

जून के फोटो-परिणाम

प्रथम फोटो : **किस अपराध की हमें सजा दी ?**

द्वितीय फोटो : **हमको प्यारी है आजादी !**

प्रेषक : **श्री राजा दुबे,** २७, शुक्ला कॉलोनी, मन्दसौर (म. प्र)

पुरस्कार की राशि रु. २५ इस महीने के अंत तक भेजी जाएगी ।

छोटी छोटी चिल्लर से भी आपकी जिंदगी बदल सकती है

जब आप रुपयों के हिसाब किताब में लगे रहते हैं तो पता ही नहीं चलता कि छोटी चिल्लर कब कहां निकल भागी,लेकिन क्या आपने कभी सोचा है;कि ५, १० और २५ पैसे के यही छोटे छोटे सिक्के, यही चिल्लर जो घर खर्च के बजेट में से बाकी रह जाती है, आपकी बड़ी बचत बन सकती है।

बालक्षेमा जमा योजना ऐसी ही योजना है जिसमें छोटे पैमाने को बचत कुछ ही समय में विशाल हो जाती है.

अपने बच्चों को बचत का महत्त्व हिसाब सिखाइये उन छोटे छोटे खुबसूरत बक्सों में, जो हम छोटी जमा योजना के लिए देते हैं, पैसे डाल कर वे खुश होंगे. **बालक्षेमा** योजना का एजेंट इन बक्सों की चाभी लेकर खुद आपके घर आयेगा और बचत का यह पैसा, रसीद देकर बैंक ले जायेगा.

और फिर, कुछ समय बाद आप यह देख हैरत में रह जायेंगे कि छोटी छोटी चिल्लर से की गयी बचत कितनी बड़ी हो गयी है.

बालक्षेमा

जमा योजना

केनरा बैंक

(पूर्णतः भारत सरकार के स्वामित्व में)

प्रधान कार्यालय: बैंगलूर-५६० ००२

विकास के लिये सेवारत—
सेवा के लिये विकासशील

maa CB HIN 2 A

CHANDAMAMA (Hindi) AUGUST 1977 Regd. No. M. 5452
everest/929/PP-hn